محرم نمبر ۱۴۲۸ھ

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَّ کِتَابٌ مُّبِیْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب



مؤسسۂ نور ہدایت حسینیہ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

Jan.-Feb. 2007

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526 Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA, Phone : 0522-2252230

वर्ष–3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 7–8

माह जनवरी–फरवरी – 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

मुहर्रम नम्बर 1428

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

मुहर्रम नम्बर 1428

वार्षिक – 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत – 40 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0 मज़मून लेखक	पेज न0
1– हुसैन की अज़ादारी	
ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ मौलाना सै0 कल्बे हुसैन मुजतहिद	3
2– हुसैन और इस्लाम	
सय्यिदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह	8
3– ला–इलाहा इल–लल्लाह की बुनियाद	
इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला	20
4– हक़ और बातिल की जंग	
सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद नक़वी साहब ताबा सराह	24
5– हुसैनियत क्या है?	
अल्लामा जज़ाएरी आयतुल्लाह मुफ़्ती सै0 तैय्यिब आग़ा साहिब	27
6– हुसैन (अ0) के मक़सद की हिफ़ाज़त करने वाले	
मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इज्तेहादी	30
7– जनाब उम्मे कुलसूम (स0) का मरसिया (शोक–काव्य)	
मु0 र0 आबिद	32
8– कर्बला की शेर दिल बहेन	
अदीबा बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा	35
9– इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत	
हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान	38
10– मुख्य समाचार	
इदारा	40

हुसैन की अज़ादारी

ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ मौलाना सै0 कल्बे हुसैन मुजतहिद

रसूल (स0) के बेकस नवासे मज़लूम हुसैन इब्ने अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की शहादत को क़मरी महीनों के हिसाब से तेरह सौ तेरह बरस ख़त्म होने के क़रीब हैं। 61 हिजरी में यह दिलदोज़ शहादत कर्बला में हुई और अब 74 हिजरी ख़त्म की हदों तक आ चुका है, इस तेरह सौ बरस में कोई दौर ऐसा नज़र नहीं आता। जब मुहर्रम के महीने की शुरुआत हुई हो और हुसैन (अ0) के चाहने वालों के घरों में मातम की सफ न बिछ गई हो, शुरु–शुरु में तो इस ग़म को आलमगीर नहीं कहा जा सकता मगर अब तो यह कहना बड़ी बात नहीं है कि हर मुल्क, हर शहर, हर घर में हुसैन (अ0) का ग़म न सही तो हुसैन का ज़िक्र तो पहुँच ही चुका है। ज़िलहिज्जह की आख़री तारीख़ में इधर मग़रिब के किनारे पर मुहर्रम का चाँद ग़म का ख़ंजर बनकर चमका उधर उस मज़लूम की याद किसी न किसी सूरत में दिलों में ताज़ा हो गई, दोस्त अन्दाज़े ग़म और आँसुओं की रवानी में याद करते हैं और दुश्मन अज़ाए हुसैनी को रोकने की ग़र्ज़ से सही मगर याद ज़रूर कर लेते हैं बल्कि ख़ुदा का शुक्र है कि हमारा अज़ादारी का अन्दाज़ ही कुछ ऐसा है कि वह ग़ैर जो जिनको इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं, न वह हमारे रसूल को मानते हैं न हमारे इमामों पर उनका ईमान है, मगर वह भी हमारी मज्लिसों, हमारी सीना ज़नी, हमारी नौहाख़्वानी, हमारी ताज़ियादारी और रोने–धोने को देखकर हुसैन और उनके हैरतअंगेज़ कारनामों को ज़रूर जान लेते हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि जिस तरह हुसैनियत के फिदाई हर लम्हा और हर घड़ी इसी फ़िक्र में रहते हैं कि अज़ाए हुसैनी मुख़तलिफ सूरतों से दुनिया में आम होती जाए, बढ़ती जाए घटने न पाए, उसी तरह हुसैन (अ0) के दुश्मन ज़बान से दुश्मनी का इज़हार न कर सकें, मगर अज़ादारी के हर जुज़ को बिदअत कहकर दुनिया से मिटा देने में उतनी ही कोशिश करते हैं जितनी हम बाक़ी रखने की कोशिश करते हैं। लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि शीआ बिलकुल पस्त क़ौम हों, मुफ़लिस हों, मुहताज हों, सियासत के मैदान में सबसे कमतर हो, हर दौर में पीछे रह जाते हों मगर अज़ाए हुसैन (अ0) के फैलाने और बढ़ाने में हमेशा कामियाब और हर मुख़ालेफत करने वाले पर ग़ालिब रहे और इन्शाअल्लाह ग़ालिब रहेंगे। यह इस वजह से नहीं कि हम ग़ालिब हैं, हम फ़िक्र वाले हैं, हम ख़ुश तदबीर हैं, जी नहीं बल्कि हमारा पक्का अक़ीदा है कि ख़ालिक़ की मर्ज़ी और चाहत यही है कि गमे हुसैनी, ज़िक्रे हुसैनी, वाक़ेआते शहादत दुनिया में फैलते रहें, बाक़ी रहें बल्कि बढ़ते रहें।

आज तो आप कह सकते हैं कि हम इस ग़म को फैला रहे हैं, बढ़ा रहे हैं। तमाम दुनिया को हुसैनियत की पहचान करा रहे हैं मगर इस शहादत के वाक़ेए से पहले आप थे या क़ुदरत थी जिसने हुसैन के तज़किरे छेड़–छेड़कर इस ग़म को आम कर दिया? इस्लामी इतिहास की बुनियाद और इन्सानियत की शुरुआत जिस ज़ात से हुई यानी जनाबे आदम (अ0) वहीं से अज़ाए हुसैन

(अ0) की बुनियाद पड़ी और जब कोई ज़िक्र करने वाला न था तो ख़ुद ज़बाने कुदरत ने मज्लिस पढ़ी और जिबरीले अमीन ने ज़ाकिरी शुरु की।

जनाबे आदम (अ0) अपने तर्के औला की सज़ा में जन्नत से निकले और तर्के औला के असर को मिटाने के लिए कुदरत ने कुछ बातों की तालीम दी कि उनके वसीले से तौबा करो तो क़बूल करूँ। वह बातें क्या थीं: मुहम्मद (स0), अली (अ0), फातिमा (स0), हसन (अ0), हुसैन (अ0)।

आदम (अ0) ने हर कलेमा अपनी ज़बान पर जारी किया मगर जब पाँचावां नाम लिया तो अपने आप रोए और क्यों न रोते। हुसैन (अ0) ने फरमाया है: ''जब भी कोई मोमिन मुझको याद करेगा तो ज़रूर रोएगा।'' आदम (अ0) के कामिल मोमिन होने में शक न था इसलिए हुसैने मज़लूम (अ0) की मुबारक ज़बान से निकली हुई हदीस आदम के आँसुओं की चमक में हक़ हो कर ज़ाहिर हुई और आदम ने जिबरईल से पूछा कि इसकी वजह क्या है कि किसी और नाम से मेरे दिल पर ग़म के असर पैदा न हुए मगर इस पाँचवें नाम ने रुला दिया। जिबरईल ने मज्लिस पढ़ना शुरु की। आदम ये तुम्हारा वह बेटा है जो लाचारी की हालत में भूखा, प्यासा बड़े ज़ुल्म व सितम के साथ क़त्ल किया जाएगा। न इसका कोई साथ देने वाला होगा और न कोई मदद करने वाला होगा, आदम काश तुम देख लेते कि यह मज़लूम किस तरह मदद की आवाज़ बुलन्द कर रहा होगा और इरशाद कर रहा होगा कि मेरा कोई मददगार अब बाक़ी नहीं है और प्यास से मेरा दिल भुना जाता है। आदम प्यास बढ़ते–बढ़ते इस मज़लूम और आसमान के दरमियान में धुएँ की तरह फैली हुई होगी और इसकी फरियाद के जवाब में कोई नैज़ा लगाता होगा और कोई तलवारें मारता होगा। यहाँ तक कि हुसैने मज़लूम को दुश्मन गर्दन से इस तरह ज़ब्ह कर देंगे जिस तरह गोस्फ़न्द को ज़िब्ह किया जाता है। इनका सामान लूट लेंगे और इनके घर वालों के साथ शहीदों के सर शहर–शहर में फिराएंगे। ऐ आदम ये वाक़ेआ ख़ुदा के इल्म में इसी तरह गुज़रा है।

आदम (अ0) और जिबरईल (अ0) इस तरह रोए जिस तरह वह औरत रोती है जिसका जवान बेटा मर गया हो, जन्नत से निकलने के बाद आदम (अ0) दूसरी जगह उतरे और हौव्वा (अ0) दूसरी जगह उतरीं। जनाब आदम (अ0) हौव्वा(अ0) की तलाश में हैरान व परेशान थे। चलते–चलते कर्बला की ज़मीन पर पहुँचे। इस ज़मीन पर क़दम रखते ही दिल भर आया और आँख से आँसू बह निकले यहाँ तक कि मक़तले इमाम में पहुँचकर ठोकर लगी और पैर से ख़ून जारी हुआ। ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ की कि मेरे मालिक हर जगह से गुज़र गया मगर न तो कहीं मेरे दिल पर ग़म तारी हुआ और न ठोकर खाई। क्या मुझ से कोई गुनाह हुआ कि ठोकर लगी और ख़ून बहा। कुदरत ने जवाब दिया कि तुमसे न कोई ख़ता हुई न कुसूर हुआ, बल्कि यह वह जगह है जहाँ पर तुम्हारा बेटा हुसैन क़त्ल किया जाएगा। आदम शहादत के हालात सुन कर रोए और हुसैन (अ0) के क़ातिलों पर लानत करके आगे बढ़े।

इस मज्लिस में ज़ाकिर ख़ुद कुदरत थी और हाज़िरीने मज्लिस आदम व जिबरईल थे अज़ाब नाज़िल करने से पहले ख़ुदा ने जनाब नूह (अ0) को हुक्म दिया कि कश्ती बनाओ। नूह ने तख़्ते चीरे और कीलें जिबरईल लाये। सब कीलें लग चुकीं तो आख़िर में पाँच कीलें रह गईं। जिबरईल ने तालीम दी कि पहली कील मुहम्मद

(स0) का नाम लेकर कश्ती के सर पर लगा दो, दूसरी अली (अ0), तीसरी फातिमा (स0), चौथी हसन (अ0), पाँचवीं हुसैन (अ0) का नाम लेकर लगा दो। यह नाम आते ही इधर तो इस कील से नूर चमका और आँसू टपके और उधर नूह (अ0) ने कील से आँसू टपकने की वजह मालूम की। जिबरईल ने शहादत के वाक़ेआत बयान किये और नूह (अ0) का तो नाम ही ज़्यादा रोने और गिरया करने की वजह से नूह हुआ था इसलिए उनका रोना ताज्जुब वाली बात नहीं थी।

जनाबे नूह (अ0) ईमानदारों को लेकर कश्ती में सवार हुए और उठती हुई मौजों में बाक़ी इन्सानी ज़िन्दगी को अपने दिल में जगह देकर ख़ुदा के सहारे पर नूह (अ0) की कश्ती ने हर सरज़मीन पर घूमना शुरु किया। चलते–चलते कर्बला की तरफ आ गयी और एक मौज ने कश्ती को इतनी ज़बरदस्त तकान देना शुरु की कि जनाबे नूह (अ0) घबरा गए। दुआ के हाथ बुलन्द किये मेरे मालिक! हर ज़मीन से गुज़र गया मगर यह हालत कहीं न हुई, यह कौन सी ज़मीन है जहाँ कश्ती डूबी जा रही है। आवाज़ आई, नूह ये मेरे हुसैन मज़लूम के क़त्ल की जगह है। कुदरत की ज़बान ने वाक़ेआत बयान किये और नूह ने गिरया व बुका के साथ हुसैन (अ0) के क़ातिलों पर लानत की, तूफान से नजात पा गए।

जनाब इब्राहीम (अ0) ने अपने ख़याल में जनाब इस्माईल (अ0) को ज़िब्हा कर दिया। मगर जब आँख से पट्टी खोली देखा। इस्माईल तो सही वा सालिम हैं मगर दुम्बा ज़िब्ह हुआ। अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ की कि मेरे ख़ालिक़ अगर मैं इस्माईल को ज़िब्ह करता और इस ग़म में मेरा दिल में जो दर्द होता तो जो मुझको सवाब मिलता उससे अब महरूम हो गया। ख़ुदा का इरशाद हुआ कि हुसैन (अ0) से तुमको ज़्यादा मुहब्बत है या इस्माईल से, अर्ज़ की हुसैन से। कुदरत ने जवाब दिया कि सुनो हुसैन मज़लूम पर यह जुल्म होंगे, यूँ क़त्ल होंगे, इब्राहीम (अ0) तुम हुसैन (अ0) के मसाएब सुनकर रो दिये तो तुम्हारा सवाब इससे बहुत ज़्यादा हो गया जो इस्माईल के ग़म में होता।

मुसलमान! कान खोल कर सुनें आँख खोल के देखें कि जनाबे इब्राहीम (अ0) फरमा रहे हैं कि मैं इस्माईल (अ0) को याद करके रोता तो मुझको सवाब मिलता। अब फरमाइये रोना बिदअत है या सवाब का काम? और फिर ज़िब्ह के बाद इस्माईल यक़ीनन ज़िन्दा–ए–जावेद होते तो अगर ज़िन्दा–ए–जावेद का मातम करना हराम था तो जनाब इब्राहीम के दिल की तमन्ना क्यों थी कि मैं रोता? सुन रखो कुर्आन हमारे रसूल (स0) से फरमाता हैः ''यह तो तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ0) ही की मिल्लत है'' दूसरी जगह पर इरशाद होता है कि मिल्लते इब्राहीम से वही अलग हो सकता है जो अपने आपको बेवक़ूफ बनाए। तो जो मिल्लते इब्राहीम से अलग नहीं हुए हैं वह हुसैन (अ0) को ज़िन्दा–ए–जावेद समझने के बाद भी रो रहे हैं और जो कुर्आन के इरशाद के हिसाब से बेवक़ूफ हैं वह जो मिल्लते इब्राहीम से मुँह फेरे, जिन्दा–ए–जावेद के मातम को हराम और बिदअत बता रहे हैं। जनाबे इब्राहीम (अ0) घोड़े पर सवार हैं और कर्बला की ज़मीन पर गुज़र हुआ। घोड़े ने ठोकर ली और जनाब इब्राहीम गिरे, सरे मुबारक से ख़ून जारी हुआ। ख़ुदा से अर्ज़ की, मेरे मालिक कोई कुसूर हुआ? इरशाद हुआ नहीं। मगर यह वह जगह है जहाँ तुम्हारे बेटे हुसैन (अ0) का ख़ून बहेगा। तुम्हारा ख़ून ख़ूने हुसैन में मिलना चाहता है। यहाँ पर कुदरत की ज़बान ने मसाएब

की मज्लिस पढ़ी और जनाब इब्राहीम रोए।

जो शख़्स जनाब इस्माईल की दुम्बियाँ चराता था उसने आकर अर्ज़ की कि यह दुम्बियाँ इस नहर से पानी नहीं पीतीं। जनाब इस्माईल ने ख़ुदा की बारगाह में सवाल किया। जवाब मिला कि उन्हीं दुम्बियों से पूछो। दुम्बियों ने अर्ज़ किया कि ऐ ख़ुदा के नबी! यह वह नहर है जिसके किनारे आपका बेटा हुसैन प्यासा ज़ब्ह होगा। हम इस नहर से पानी नहीं पी सकते।

वादे के सच्चे जनाबे इस्माईल (अ0) पर उम्मत ने हज़ारों ज़ुल्म किये। यहाँ तक कि उनके जिस्म की खाल खींच ली। फरिश्ता नाज़िल हुआ कि तुम इजाज़त दो तो मैं इनसे तुम्हारा बदला ले लूँ। जनाब इस्माईल ने जवाब दिया कि नहीं मैं बदला नहीं चाहता मैं तो हुसैन इब्ने अली (अ0) की पैरवी करूँगा और हर ज़ुल्म पर सब्र करूँगा। मालूम होता है क़ुदरत इनसे भी शहादत के वाक़ेआत बयान कर चुकी थी।

हज़रत मूसा (अ0) मुनाजात के लिए जा रहे हैं और एक शख़्स ने रास्ता रोक कर अर्ज़ की कि ख़ुदा के नबी मुझ से एक गुनाह हो गया है, ख़ुदा से सिफारिश फरमाइयेगा कि मुआफ़ कर दे। जनाबे मूसा (अ0) ने मुनाजात शुरु की, आवाज़ आई। मूसा क्या चाहते हो? अर्ज़ की तू ख़ूब जानता है इस शख़्स का गुनाह मुआफ़ कर दे। जवाब मिला कि मूसा (अ0) जो सच्चे दिल से मुझ से तौबा करेगा उसे मुआफ़ कर दूँगा, मगर हुसैन के क़ातिलों को न मुआफ़ करूँगा। जनाब मूसा (अ0) ने पूछा और ख़ुदा ने शहादत के वाक़ेआत बयान किये। जनाबे मूसा (अ0) शिद्दत के साथ रोये।

सुलेमान (अ0) का तख़्त हवा पर है कि कर्बला की ज़मीन आ गई। तख़्त ने तीन चक्कर खाए और कर्बला की ज़मीन पर उतर गया। जनाबे सुलेमान (अ0) ने हवा से पूछा कि इस ज़मीन पर क्यों रुक गई, जवाब मिला कि यह हुसैने मज़लूम के क़त्ल की जगह है। जब तक हुसैन (अ0) के क़ातिल पर लानत न करोगे तख़्त आगे नहीं बढ़ सकता। जनाबे सुलेमान (अ0) ने शहादत के हालात सुने, हुसैन (अ0) के क़ातिलों पर लानत की, उस वक़्त तख़्त आगे बढ़ा।

जनाबे ज़करिया (अ0) को पंजतन के मुबारक नाम सिखाये गये। जब आप चार नाम लेते थे दिल ख़ुश हो जाता था। जब पाँचवाँ नाम लेते थे रोने लगते थे। सवाल किया, ख़ुदा के दरबार से जवाब मिला कि यह उस मज़लूम का नाम है जिसके मसाएब की हद न होगी। यह हालात सुनकर तीन दिन तक रोया ही किये।

हज़रत अब्बास (अ0) रसूल (स0) के चचा की बीवी उम्मुल फज़ल कहती हैं कि हुसैन रसूल की गोद में थे और रसूल ख़ूब आँसुओं से ज़ारो क़तार रो रहे थे मैंने पूछा, रसूल (स0) ने फरमाया यह मेरा बच्चा बड़े ज़ुल्म व सितम के बाद शहीद किया जायेगा।

अमीरुलमोमिनीन अली (अ0) सिफ्फीन की तरफ जाते हुए कर्बला की ज़मीन तक पहुँचे, सवारी से उतरे और फरमाया कि ''ऐ अबुअब्दिल्लाह हुसैन सब्र करना सब्र करना।'' अब्दिल्लाह इब्ने यह्या कहते हैं कि मैंने अर्ज़ की कि मौला। इस जुमले का क्या मतलब है? आपने फरमाया कि ऐ अब्दुल्लाह! एक दिन मैं रसूल (स0) की ख़िदमत में गया तो मैंने देखा कि आप बहुत शिद्दत से रो रहे हैं। मैंने अर्ज़ की कि ख़ुदा के रसूल (स0) आप क्यों रो रहे हैं? आपने इरशाद फरमाया कि ऐ अली! अभी जिबरईल आये थे और मुझको ख़बर दी कि मेरा हुसैन कर्बला की ज़मीन पर

क़त्ल होगा और उस ज़मीन की मिट्टी लाकर मुझे दिखाई।

सय्यिदा ज़िनाने आलम (स0) से पैग़म्बर ने फरमाया था कि जो बच्चा तुम्हारे पेट में है वह शहीद होगा इसलिए आप हमल के ज़माने में भी रोईं और पैदाईश के वक़्त भी रोईं।

जनाब सलमान फारसी (रज़ि0) फरमाते हैं कि कोई फरिश्ता आसमान पर ऐसा न था जिसने रसूल (स0) की ख़िदमत में आकर हुसैन के ग़म में ताज़ियत न अदा की हो।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) फरमाते हैं कि जब जिबरईल (अ0) ने इमाम हुसैन (अ0) की शहादत की ख़बर रसूल (स0) से बयान की तो रसूल ने यह ख़बर अली (अ0) से कह दी। दोनों भाई हुजरे में बैठकर देर तक रोया किये, यहाँ तक कि जिबरईले अमीन ने आकर अर्ज़ की कि ख़ुदा का इरशाद है कि बस अब सब्र कीजिये।

यह तमाम वाक़ेआत बताते हैं कि हुसैनका मातम इंसान की पैदाईश से जारी हुआ और बयान करने वाला ख़ुद ख़ुदा था और सुन्ने वाले नबी और रसूल थे तो अगर ख़ुदा की मर्ज़ी न थी कि हुसैन का ज़िक्र हमेशा ज़िन्दा रहे तो हर नबी से बयान करने की क्या वजह थी। ऐसे ज़िक्र को अगर कोई दुनिया से मिटाना चाहे तो याद रखे कि ख़ुद मिट जायेगा। दुनिया मिट जायेगी मगर हुसैन का ज़िक्र न मिटा है न मिटेगा।

यह भी ग़ौर कर लेने के क़ाबिल है कि जिस नबी ने यह ज़िक्र सुना वह रोया। तो अगर रोना बिदअत होता तो कभी तो वही होती कि मैं हुसैन की शहादत का ज़िक्र रोने के लिए नहीं करता, यह बिदअत है इस पर अमल न करना। फिर यह भी समझ लीजिये कि अब तो लोग एतेराज़ करते हैं कि "हम ज़िन्द–ए–जावेद का मातम नहीं करते" मगर नबी तो शहादत कैसी, पैदाईश से भी पहले रोये और ख़ासकर हमारे रसूल तो हुसैन को गोद मे बिठाकर रोए। अब फरमाइये कि जब रसूल की गोद में हुसैन मौजूद थे तो ज़िन्दा थे या ख़ुदा की पनाह शहादत हो चुकी थी तो किसी सहाबी ने क्यों न रोका कि अल्लाह के रसूल, हुसैन तो ज़िन्दा हैं आपकी गोद में हैं फिर यह रोना कैसा? इसलिए अगर इस ज़ाहिरी ज़िन्दगी में रसूल का रोना मसाएबे हुसैन सुनकर जायज़ था तो शहादत के बाद रोना भी न बिदअत है न हराम बल्कि बिलकुल जायज़ है, सीरते रसूल है, बेहद सवाब का काम है।

□□□

हुसैन और इस्लाम

सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

एतिहासिक संसार में हुसैन का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। आपके व्यक्तित्व तथा महान् कार्यों के सामने करोड़ों मनुष्य मस्तक झुकाये हुए हैं। संभव है कि आपने उनके जीवन की अदभुत घटनाओं को न सुना हो, परन्तु आपने हुसैन का नाम तो अवश्य ही सुना होगा और यह भी जानते होंगे कि वे किसी बड़े एतिहासिक परिवर्तन के चरित्रनायक है। संभव है कि आपके हृदय में यह भी विचार उत्पन्न होता हो कि हुसैन कौन थे और कर्बला के महासमर में विशेषताएँ क्या हैं जो इन महापुरुष से सम्बन्ध रखती हैं। यदि इस विषय में आपकी जिज्ञासा है तो कृपया थोड़ा समय व्यय करके हुसैन और उनके मिशन, जिसके सम्बन्ध में उन्होंने बड़े से बड़े बलिदान देने में तनिक भी आनाकानी नहीं की, उनका परिचय प्राप्त कीजिये, जिससे आपको हुसैन और उनके कार्यों का सच्चा ज्ञान प्राप्त करने का अवसर सुलभ हो जाए।

हुसैन कौन थे?

हुसैन के साथ इस्लाम का आत्मिक सम्बन्ध है। छठी शताब्दी में जब कि संसार में घोर अन्धकार छाया हुआ था और चारों ओर लड़ाई दंगा ही दिखाई पड़ता था प्रायदीप अरब में इस्लाम का सूर्य उदय हुआ, जिसकी किरणें हिजाज़ की राजधानी मक्का शहर से प्रकट हुई और फिर धीरे–धीरे उन्होंने सारे संसार को प्रकाशित कर दिया। यह प्यारा धर्म जिसका नाम इस्लाम है, दो महापुरुषों के परिश्रम का फल है। जिनमें से एक तो हज़रत मुहम्मद (स0) और दूसरे उनके चचेरे भाई हज़रत अली (अ0) हैं। इन्हीं महापुरुषों ने इस्लाम धर्म को उन्नति दी तथा बड़े–बड़े सहाबियों ने भी सहायता की जो सदा इतिहास के अन्दर प्रसिद्ध रहेंगे यद्यपि इनको इस्लाम के स्थापित करने और पीछे आने वाली घटनाओं से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है और न वे विशेष प्रचारक ही कहे जा सकते हैं। इन्हीं दोनों भाइयों (हज़रत मुहम्मद स0 और हज़रत अली अ0) की अदभुत दृढ़ता और अपने रुधिर को पसीना समझ लेने का प्रभाव यह हुआ कि इस्लाम की नीव पड़ी और वह संसार में इस वेग से फैला।

प्रकृति को इन दोनों भाइयों के सम्बन्ध को अत्यन्त घनिष्ट बनाना था। इसी कारण हज़रत मुहम्मद (स0) ने अपनी इकलौती बेटी बीबी फ़ातिमा (स0) का विवाह हज़रत अली (अ0) के साथ कर दिया और इस प्रकार हज़रत अली का पैग़म्बर (स0) के भाई होने के अतिरिक्त दामाद होने का गौरव भी प्राप्त हुआ और इस नाते का प्रभाव इस्लाम के फैलाने में और भी अधिक सहायक हुआ इन्हीं माँ बाप अर्थात हज़रत अली (अ0) और बीबी फ़ातिमा (स0) से दो बच्चे पैदा हुए जिनके नाम हसन और हुसैन थे। इनका जन्म उस समय हुआ जब कि इस्लाम एक बच्चे की भांति रसूल की गोद में पल रहा था। इस प्रकार इन बच्चों तथा इस्लाम का पालन पोषण एक ही साथ होने लगा। ये बच्चे एक ओर इस्लाम के नेता अपने नाना और दूसरी ओर इस्लाम के सहायक अपने पिता की गोदों में पलने लगे और इस्लाम की सेवा

में बचपन ही से तत्पर हो गये और जितनी आयु बढ़ती गई उनके ह्रदय में इस्लाम का सच्चा प्रेम बढ़ता गया।

धार्मिक सिद्धान्त से ये दोनों महापुरुष अर्थात हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन संसार के नेता और इस्लाम के रक्षक होते हैं। एतिहासिक रूप से यह एक मानी हुई बात है कि इन दोनों महापुरुषों ने अपना जीवन इस्लाम की सहानुभूति और रक्षा में आदर्श की भांति गुज़ारा और इसीलिए इस्लाम और उसके नियमों से जितना घनिष्ट प्रेम और सम्बन्ध इनको हो सकता था वह किसी और को नहीं हो सकता।

बनी उमैय्या का शासन या इतिहास का एक काला धब्बा

इस्लाम के पैग़म्बर की मृत्यु इस्लाम के लिए एक बहुत बड़ी आपत्ति थी। पैग़म्बर (स0) के मरने के बाद इस्लाम का एक नया रूप प्रकट हुआ। इस नये रूप के आरम्भ में कुछ दिनों तक तो इस्लाम में सादगी और ऊपर की टीमटाम से घृणा इत्यादि गुण मौजूद रहे। किन्तु जब देशों के जीतने का काम बढ़ता गया, क़ैसर व कसरा के देशों (सीरिया, ईरान) पर मुसलमानों का अधिकार हुआ और बड़े–बड़े राज्य अधिकार में आये मुसलमानों में केवल हुकूमत ही की इच्छा शेष रह गई और धार्मिक सिद्धांतों पर चलने के बदले केवल राजनैतिक झगड़ों में पड़ने और दुर्बलों को हानि पहुँचाने और उन पर अन्याय करने का समय आरम्भ हुआ। रसूल (स0) और उनके कुटुम्ब (बनी हाशिम) के पुराने बैरी बनी उमैया जो सदा रसूल के इस्लाम फैलाने के विरूद्ध रहते थे और सबसे पीछे विवश होकर इस्लाम धर्म ग्रहण किया था उन उमैया के कुटुम्बियों को रसूल की मृत्यु के बाद अपनी इच्छाओं को पूरा करने का अच्छा अवसर मिला। दूसरे ख़लीफा हज़रत उमर के समय में शाम (सीरिया) पर बनीउमैया का पूरा अधिकार हो गया था जो केवल गवर्नर के पद पर था। और तीसरे ख़लीफा हज़रत उसमान के समय में तो शाम के शासक अमीरे मुआविया का पूरा–पूरा अधिकार हो गया और उमैय्या की संतान को इस्लाम से पुराने बैर को पूरा करने का समय मिला। हज़रत उस्मान, अर्थात तीसरे ख़लीफा के साथ अच्छा विचार रखते हुए यह कहा जा सकता है कि उनको अपने सीधेपन के कारण अपने कुटुम्ब की दशा का पूरा–पूरा ज्ञान न था। परन्तु यह बात मान ली गयी है कि उस समय रसूल (स0) के सहाबियों और इस्लाम के सच्चे सेवकों के साथ घृणित व्यवहार किये गये थे। और अपने कुटुम्बियों का पक्षपात और उनके साथ अधर्म की सहायता भी अधिक की गई थी जिसके पीछे सबके सब अत्यन्त दुखी और अधीर होकर ख़लीफा साहब की मृत्यु के सहायक बन गये। इतिहास के देखने से बनीउमैया पर इसका बहुत कुछ दोष प्रकट होता है। इसके बाद फिर दशा बदली और ख़िलाफत की गद्दी पर अधिकार करने के लिए बड़े–बड़े सहाबियों ने मिलकर हज़रत अली (अ0) को चुना और सबने उनको अपना धार्मिक तथा नैतिक नेता बनाया। परन्तु शाम के शासक अमीरे मुआविया ने जो अबुसुफ़ियान के बेटे थे और जो शाम पर अपना अधिकार कर चुके थे इस्लाम के पारस्परिक समझौते को न माना और हज़रत उस्मान के वद्य के बदले के बहाने हज़रत अली (अ0) से युद्ध करने पर उद्यत हुये जिसका परिणाम सिफ़्फ़ीन का युद्ध हुआ जिसमें सहस्त्रों मुसलमानों का ख़ून पानी की तरह बह गया। अन्त में इस युद्ध का निर्णय एक कपट की सन्धि द्वारा हुआ। यदि यह सन्धि न्याय द्वारा होती तो मुसलमानों में यह अन्तर न होता

परन्तु शोक है कि लालच ने इस कपटी समझौते को लड़ाई दंगे के रूप में परिवर्तित करके आपस की शत्रुता रूपी खाईं को और भी अधिक चौड़ा कर दिया। यह वह समय था जबकि शाम के सिंहासन पर बनीउमैया का पूरा–पूरा अधिकार हो गया था। इधर हज़रत अली (अ0) को कूफ़ा की मस्जिद में नमाज़ पढ़ते शहीद किया गया। उधर शाम में रसूल (स0) के कुटुम्ब का पूरी तरह अपमान किया गया और दमिश्क़ शहर बल्कि तमाम इस्लामी देशों में रसूल के कुटुम्ब को भला बुरा कहने का साहस किया गया।

उस समय की आवश्यक विशेषताएँ

अमीरे मुआविया की कुछ मुसलमान पैग़म्बर (स0) के बड़े सहाबियों में गणना करते हैं। परन्तु उनके शासन प्रबन्ध में निम्नलिखित घृणित विशेषताएँ प्रकट होती हैंः

1– ख़ुदा और पैग़म्बर को बुरा कहना और नई हदीसों के गढ़ने को पाप न समझना बल्कि गढ़ने वालों को परितोषिक और अधिकार देना जैसा कि अबुलहसन इब्ने मुहम्मद मदायन वासी ने जो इस्लामी और एक बड़े ऐतिहासिक पुरुष माने जाते हैं अपनी किताबुलअहादीस में उस समय का हाल लिखा है ''मुआविया ने तमाम कर्मचारियों को लिखा कि जो हज़रत उसमान की किसी बड़ाई को बताए उसका पूरा नाम और पता मेरे पास लिखकर भेज दो और उसे बहुत परितोषिक देकर धनी कर दो।'' इसका फल यह हुआ कि हज़रत उसमान की बड़ाई की बहुत सी हदीसें गढ़ ली गईं और बहुत दिनों तक यह काम जारी रहा।..............फिर कुल शासकों (गवर्नरों) को लिखा गया कि अब हज़रत उसमान की बड़ाई में बहुत सी हदीसें इकटठा हो गई हैं। अब तुम लोग और सहाबियों के लिए हदीसें गढ़ने का प्रबन्ध करो और हज़रत अली की बड़ाइयों की हदीसों की तरह सहाबियों के लिए भी हदीसें इनाम की लालच से तैयार कराओं। हज़रत अली और उनके शीओं को जिस प्रकार हो सके बदनाम करो। इस आज्ञा को पाते ही तुरन्त सहस्त्रों हदीसें गढ़ ली गईं। उपदेशक सभाओं में और पाठशालाओ में बालकों को यह गढ़ी हुई हदीसें कुर्आन शरीफ की भांति रटाई जाने लगीं यही नहीं किन्तु लड़कियों, स्त्रियों और दास–दासियों को इन हदीसों को मुखाग्र कराना आवश्यक समझते थे। इसका अन्तिम फल यह हुआ कि इस्लामी सच्ची हदीसें इन कल्पित हदीसों से मिलकर मानने के योग्य न रहीं और ठीक बात जानने में बड़ी कठिनाई होने लगी।

2– इस्लाम के महापुरुषों को भला–बुरा कहना और गाली देने की रीति भी इस समय प्रकट हुई। शहर दमिश्क़ और शाम की मस्जिदों के मिम्बरों पर चालिस बरस तक यह रसम जारी रही और हज़रत अली को गालियाँ दी गईं।

3– इस्लामी देशों में मदिरा स्वतंत्र पूर्वक पी जाने लगी और बेचने तथा मोल लेने वालों पर कोई रोक टोक न थी, जैसा कि अब्दुर्ररहमान इब्ने सुहैल अन्सारी रसूल के सहाबी ने जब मदिरा से लदे हुए ऊँट देखे तो आपने नैज़े की नोक से मदिरा की मश्कों को फाड़ डाला। जब अमीरे मुआविया को यह समाचार मिला तब उसने कहा कि ख़ैर उस बूढ़े को सज़ा न दो क्योंकि बुढ़ापे के कारण बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। जब अब्दुर्ररहमान ने यह सुना तो कहा कि ख़ुदा की क़सम मेरी बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई बल्कि मैंने पैग़म्बर साहब से सुना है कि मदिरा न पीना चाहिए और न उसको बर्तन में रखना चाहिए (किताब असदुलग़ाबा इब्ने असीर जुज़री जि–3 पे–299, इसाबा हाफ़िज़ इब्ने हजर

अस्क़लानी जि–2 पे–401) इस से ज्ञात होता है कि उस समय मुसलमानों में मदिरा पीना प्रचलित हो गया था। यदि कोई सच्चा मुसलमान मदिरा पीने से लोगों को रोकता था तो वह पागल समझा जाता था।

4– बेगुनाह मुसलमानों की गर्दनें काटी गईं। समरा बिन जुन्दब, बुसर बिन अरतात और ज़ियाद बिन अबीह ने इस समय बड़ा अत्याचार किया। अब्दुल्लाह बिन अब्बास के दो छोटे बच्चे माँ की गोद में शहीद किये गये जिससे माँ पागल हो गई। (देखिये किताब इसतिआब अब्दुलबर जि–1 पे–66 मतबूआ दारुल मआरिफ़ हैदराबाद)

5– धर्म का आदर बिलकुल कम हो गया था और धार्मिक नियमों का पालन भी न होता था। अमीर मुआविया ने बड़े धमण्ड से कहा कि मैंने जारिया बिन कुदामा और अहनफ दो मुसलमानों के धर्म मोल ले लिये हैं। (इस्तिआब जि–1 पे–154)। मिस्रियों ने मुआविया के दरबार में आकर ख़ुदा का पैग़म्बर कह कर सलाम किया और यह बात मान ली गई। दण्ड देना तो बहुत दूर था किसी ने रोका तक नहीं। (देखिये तारीख़ तबरी जि–2 पे–184) इन दोनों घटनाओं को हमने अपने रिसाले ''क़ातिलाने हुसैन का मज़हब'' में लिखा है जिससे उस समय की इस्लामी कमज़ोरी का पता चलता है। अमीरे मुआविया का समय किसी न किसी प्रकार व्यतीत हो गया और उनके जीवन के दिन बीत गये परन्तु वे मुसलमानों के सिरों पर अन्याय का ऐसा भूत सवार कर गये जिससे इस्लाम के कई (73) भाग हो गये। उनका बेटा यज़ीद उनके बाद गद्दी पर बैठा जिसका हाल अमीरे मुआविया को पहले से मालूम था जैसा कि अल्लामा इब्ने हजर मक्की अपनी किताब तत्हीरुललिसान व लज़नान में अमीर मुआविया की तारीफ इस प्रकार लिखते हैं कि–

1– एक रोज़ मुआविया रोने लगे। मरवान ने कहा क्यों क्या हुआ? आपके रोने का क्या कारण है? उत्तर दिया

(अनुवाद) ''दुनिया में कौन सा सुख ऐसा है जो मैंने न भोगा हो। परन्तु अब आयु अधिक हो गई है, अस्थियाँ घिस गई हैं और शरीर दुर्बल हो गया है। यदि मेरे हृदय पर यज़ीद के प्रेम का अधिकार न होता तो मैं अपने लिये सत्य मार्ग प्राप्त कर लेता।'' (हाशिया सवायक़ मुहरिक़ा मतबूआ मिस्र पे–56)

दूसरी जगह पर अल्लामा इब्ने हजर लिखते हैं– (अनुवाद) ''इन शब्दों में मुआविया ने सम्पूर्ण रूप से यह स्वीकार कर लिया है कि यज़ीद के प्रेम ने मुझको सत्य मार्ग से पृथक कर दिया है और इसी की अधिकता ने मुसलमानों को ऐसे पापी के हाथों फंसाया जो उनके नरक का कारण हुआ।'' (हाशिया सवायक़ मुहरिक़ा पे–57) इसके पश्चात यह कौन कह सकता है कि अमीरे मुआविया अपने पुत्र के आचार तथा व्यहार से अपरिचित थे और उसका युवराज यह पद उसकी सज्जनता पर निर्भर था। धन के लालच से बहुत से मुसलमानों ने यज़ीद को अपना धार्मिक नेता बना ही लिया। यज़ीद ने ख़िलाफत की गद्दी पर बैठते ही संसार को पापों से परिपूर्ण कर दिया और चारों ओर अल्लाह और धर्म का घोर विरोध होने लगा। धर्म बच्चों का खेल और इस्लाम एक निरर्थक वस्तु समझा जाने लगा। यज़ीद के आचार विचार को विस्तार पूर्वक लिखने की यहाँ पर आवश्यकता नहीं। इस्लाम का माननीय इतिहास इन घटनाओं से परिपूर्ण है। वाक़दी ने संक्षेप रूप से यज़ीद के दुष्कर्मो का इस प्रकार चित्र खींचा है–

(अनुवाद) ''वह ऐसा मनुष्य था कि अपने बाप की ब्याही बीवियों, लौंडियों और बहन बेटियों

से भी भोग करता था। वह शराब पीता था और नमाज़ न पढ़ता था। (देखिये सवायक़े मुहरिक़ा इब्ने हजर मक्की पे–135)

अब बतलाइये कि इस्लामी बादशाह–क्या ख़लीफतुल मुस्लमीन और मजूसियों में कुछ भी अन्तर हुआ। अत्यन्त पापी लोग भी अपनी माँ बहनों और बेटियों से भोग करना पाप समझते हैं। समय के राजा की देखा देखी लोगों ने भी इन्हीं बातों का अनुकरण किया और धर्म बिलकुल मिट गया। बड़े–बड़े सहाबी यज़ीद की आज्ञा का पालन करते थे और किसी के मुख से उन बातों का विरोध न होता था। सिवाय पाँच मनुष्यों के सब सहाबा और पैरोकार यज़ीद को रसूल का ख़लीफा मान चुके थे। उन पाँच पुरुषों में प्रथम नाम हुसैन इब्ने अली का है और उनकी देखा देखी अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर, अब्दुर रहमान बिन अबीबक्र, अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास थे। यज़ीद की ओर से यह प्रयत्न किया गया कि इनको भी अपना अनुयायी बनाया जाए और सबसे अधिक परिश्रम हज़रत इमाम हुसैन (अ0) को सब से पहले अनुयायी बनाने में किया गया। पुराने इतिहास और इस्लाम की उस समय की दशा देखकर अली इब्ने अबी तालिब का बेटा और रसलू (स0) के कुटुम्ब का सबसे बड़ा पुरुष (इमाम हुसैन अ0) भी यदि यज़ीद का अनुयायी बन गया होता तो इस्लाम कब का लोप हो गया होता।

हज़रत हसन मुजतबा की सन्धि कर्बला की लड़ाई की प्रस्तावना थी

जो काम समय पर हो वह अच्छा होता है। यदि समय से पहले किया जाए तो उसका फल लाभदायक होने के बदले हानिकारक होता है और जो ऐसा करता है वह दोष का भागी होता है। समय सदा का एक सा नहीं रहता बल्कि ऐतिहासिक विचार से वह सदा उन्नति करता रहता है और उस की घटनाएँ भी उसी प्रकार बदलती रहती हैं। दुनिया का प्रबन्ध इसी पर निर्भर है और मनुष्य की प्राकृतिक दशा भी ऐसी ही है। इस नियम में कोई बाधा नहीं पड़ सकती। यदि हाथ या पैर का कोई घाव दवा, फाहा और मरहम से अच्छा न हो तो उसमें नश्तर लगाया जाता है। यदि फिर भी अच्छा न हो तो उसका विष शरीर भर में फैलने के भय से उस अंग को काट कर फेंक दें तो कोई बुरा न कहेगा। यदि घाव होते ही पहले ही अंग काट डालते तो वह दोष और मूर्खता का कारण समझा जाता। किन्तु यह वही उपाय था जो अन्त में अर्थात समय पर काम लाने से अच्छा समझा गया।

यदि इमाम हुसैन बिना किसी प्रकार का यत्न किये, कुटुम्बियों और मित्रों की कमी और उनके विरोध के कारण यज़ीद को नेता मान लेते तो भी वह अवश्य मारे जाते और निस्संदेह ये प्रश्न उत्पन्न होते कि आख़िर इमाम ने मेल करके दशा को सुधारने का प्रयत्न क्यों न किया? विशेष प्रतिज्ञाओं के साथ सन्धि करके अपने अभिप्राय को क्यों न प्राप्त किया? कम से कम राज्य सम्बन्धी बातों से अलग रहकर मदीने में क्यों न रहे? और कर्बला में आकर अपने को आपत्ति में क्यों डाला? इन प्रश्नों के होने के बाद भी जिनका कोई ठीक उत्तर भी न होता वह अवश्य मारे जाते जो प्रशंसनीय न होता। किन्तु यथार्थ तो यह है कि इमाम ने जो कुछ किया वह नियमानुसार था और जिसका होना आवश्यक था, यहाँ तक कि सन् 61 हिजरी में यह घटना हो गई। आरम्भ में इमाम हसन (अ0) का विशेष शर्तों पर सन्धि करना और राजकाज को दस वर्ष तक छोड़ना

और शान्तिपूर्वक रहना और उसके बाद फिर दस वर्ष तक स्वयं इमाम हुसैन (अ0) का शान्तिपूर्वक रहना परन्तु कभी–कभी ज़बानी या लिखकर अपने अधिकार को माँगना– यह सब बातें ऐसी थीं जिनका परिणाम सुधार के बदले बहुत बुरा हुआ। सन्धि पत्र की प्रतिज्ञाओं और इमाम हुसैन (अ0) के कहने के अनुसार न होना, अमानुषिक कार्यों का होना और दुश्कर्मों का बढ़ना– यह सब बातें ऐसी थीं कि हुसैन (अ0) ने अपने हार्दिक बड़े इरादे को कर्बला की भूमि पर पूरा किया। अब ऐतिहासिक भाव से यह दोष दिया जा सकता है कि सम्भवतः हुसैन (अ0) ने अज्ञान से अपने को आपत्ति में डाला और यदि वह मदीने में रहते और यज़ीद से न लड़ते तो आप का रुधिर कर्बला की भूमि पर न बहता। यह विचार वास्तव में तुच्छ है। बनी उमैया की शत्रुता बनी हाशिम और विशेषकर अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की सन्तान से इतनी अधिक हो गई थी कि वह किसी प्रकार उनको कुशल से रहते नहीं देख सकते थे और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) की ख़ामोशी भी उनको बुरी लगती थी। यद्यपि हज़रत इमाम हसन (अ0) से प्रत्यक्ष में सन्धि हो चुकी थी तथापि उनको विष खिलाकर मारा गया। श्रीमान ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब देहलवी अपनी किताब मुहर्रम नामा पृष्ठ 74 और दूसरी किताब यज़ीद नामा पृष्ठ 83 में लिखते हैं– ''पहला ख़ून सय्यिदना इमाम हसन का है जो इतिहास की रिवायत से बिलकुल अमीरे मुआविया के ऊपर साबित है और कोई पुराना या नया निर्णय उनको इस हत्या से मुक्त नहीं कर सकता।'' कौन कह सकता है कि यदि इमाम हुसैन इराक़ में न आते और मदीने ही में रहते तो उनको मारने के लिए कोई गुप्त यत्न न किया जाता जैसा कि उन्के भाई इमाम हसन के साथ किया ही जा चुका था। ऐसा होने पर आपकी जान भी जाती और लोगों को सत्य हाल भी न मालूम होता बल्कि जिस प्रकार पहले इमाम हसन की शहादत से इनकार किया जाता रहा था यदि उसी प्रकार इमाम हुसैन (अ0) की शहादत से भी इनकार ही किया जाता तो अवश्य यज़ीद की जीत और हुसैन की हार मानी जा सकती थी। क्योंकि ऐसी दशा में हज़रत इमाम हसन (अ0) ने अपने अभिप्राय को प्राप्त किया और हुसैन को संसार ने भुला दिया और फिर संसार के सामने अपने को निर्दोष दिखला दिया और हुसैन ने अपनी जान से हाथ धोया और कोई फल न हुआ।

भला हुसैन (अ0) सा ज्ञानी कब इन बातों को भूल सकता था बल्कि अपने अभिप्राय को दो बातों पर निर्भर पाया। प्रथम तो यह कि चुपचाप प्राण दें और उनकी हत्या में यज़ीद के हाथों से इस्लाम के नियम भी न टूटें, दूसरे यह कि प्रत्यक्ष में अपने को मिटाकर सदैव अपने नाना के चलाये हुए इस्लाम को जीवित रखें। हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने अपनी दूरदर्शिता से दूसरी बात को अच्छा जानकर इस्लाम को जीवित रखने के लिए अपनी मृत्यु को अपने और इस्लाम दोनों के मिटने के बदले सहन किया। हुसैन (अ0) ने अपनी जान देकर अपने शत्रुओं के लाभ को सदा के लिए मिटा दिया और यह एक बहुत बड़ी विजय है जिसको आपने प्रत्यक्ष में मिटाकर प्राप्त किया।

हुसैन (अ0) एक सच्चे धर्म प्रचारक, उद्योगी और राजनीति के आदर्श थे

इमाम हुसैन (अ0) यथार्थ में मदीने से यह प्रेण्णा करके चले थे कि वह सत्य को सत्य और असत्य को असत्य सिद्ध करके दिखला दें, जैसा कि उन्होंने अपने अभिप्राय के पूरा करने

और यज़ीद के कुकर्मों को संसार के दृष्टिगोचर करने में वह तमाम प्रयत्न किये जो उनके उद्योग और राजनीति का पूरा परिचय देते हैं। सबसे पहले उन्होंने मदीना छोड़ने के बाद मक्के को अपने रहने के लिए चुना जिनके लिये यह सोचा जा सकता है कि इस पवित्र स्थान में लड़ना झगड़ना वर्जित है और इस तरह उनका जीवन शत्रुओं के भय से सुरक्षित रहेगा। ऐसा विचार उस मनुष्य के लिए किया जा सकता है जिसको अन्त काल तक अपनी जान बचाने का ख़याल हो। परन्तु हुसैन (अ0) तो पहले ही से मरने पर आरुढ़ थे और आने वाली घटनाओं का बराबर उच्चारण किया करते थे। इसलिए उनके सम्बन्ध में ऐसा विचार बिलकुल निर्मूल होगा। वास्तव में मक्का अरब के बीचोबीच दुनिया भर के मुसलमानों का केन्द्र था। चारों ओर से यात्री तीर्थ (हज) करने बराबर आया करते थे और यह बात धार्मिक नियमों के अनुसार मुसलमानों पर वाजिब है। हज के समय तमाम दुनिया के मुसलमान जमा होते थे और तीन महीने तक प्रसिद्ध सभा होती थी जिसमें कवि सम्मेलन और व्यापार का प्रचार होता था। इसको अस्वाकुलअरब कहा जाता था। ज़ीक़ादा से मुहर्रम तक मक्का, ताएफ और मदीने में यह सभाएँ हुआ करती थीं। इमाम हुसैन (अ0) को अरब में सब पहचानते थे यद्यपि धर्म उठ गया था और सम्भव था कि अधर्मी लोग हुसैन (अ0) को धर्मात्मा होने के कारण कदाचित न पहचानते हों। परन्तु रसूल (स0) का नाती होना, इराक़ और हिजाज़ के राजा का पुत्र होना, और अरब में सबसे बड़ा दानी (जिसके घर से कोई माँगने वाला ख़ाली न गया) और बनी हाशिम के कुटुम्ब का अगुवा होना– ये सब बातें ऐसी थीं जिनसे कोई भी अपरिचित न था और न कोई इनकार ही कर सकता था। हुसैन (अ0) ने हज का समय मक्के में रहने के लिए नियंत किया, इस से यह अभिप्राय न था कि वह अपने लिये कोई बड़ी सेना यज़ीद से लड़ने के लिए जमा करना चाहते थे। यदि वह ऐसा करना चाहते थे तो वह अवश्य कर सकते थे। यहाँ से यमन निकट था जहाँ के लोग आपके पिता के चेले थे और उनकी सन्तान से सच्चा प्रेम रखते थे। ताएफ वासी भी मुहम्मद साहब की सन्तान से विरोध न रखते थे। किन्तु हुसैन (अ0) को राज करने की इच्छा ही न थी और मक्के में उनका रहना केवल इसलिए था कि अरब के मुसलमानों को उस समय की घटनाओं का और यज़ीद के दुष्कर्मों का बोध हो जाए।

हुसैन (अ0) को मारने के लिए शाम से कुछ लोग हाजियों के भेस में भी भेजे गये थे और उनको आज्ञा थी कि यदि न मार सकें तो ज़न्जीरों में बाँधकर शाम में ले आएँ। यही वजह थी कि बिना हज किये हुसैन ने काबे को छोड़ दिया और इस तरह इस्लाम के धार्मिक नियम का पालन किया अर्थात मक्के में रुधिर (ख़ून) का बहाया जाना रोक दिया।

एकाएकी इमाम हुसैन (अ0) का हज न करना और कुटुम्ब सहित मक्का को छोड़ना साफ–साफ बताता है कि इसमें अवश्य कोई विशेषता थी, नहीं तो हुसैन (अ0) को क्या पड़ी थी कि हज को छोड़कर यात्री बने।

इमाम हुसैन (अ0) के हज न करने और मक्का को छोड़ने को अरब की क़बीलों के नेता अच्छी तरह जानते थे और दुखित भी थे जिसका कारण इतिहास से भली–भाँति ज्ञात होता है।

हुसैन इब्ने अली (अ0) कहाँ चले गये? हज भी न किया? कुटुम्ब सहित अपने नाना की क़ब्र से क्यों दूर हुए? (यज़ीद के भय से) यज़ीद क्या चाहता है? (हुसैन (अ0) से अपना बैर)।

यह असम्भव था कि रसूल का नाती पापी और शराबी की बैअत करे। इमाम हुसैन (अ0) का मक्का छोड़ना और हज न करने का कारण यज़ीद का अत्याचार था क्योंकि अरब के क़बीलों में यह बात प्रसिद्ध हो गई थी कि हाजियों के भेस में कुछ शामवासी हुसैन को मारने के लिए आए हैं। इससे अधिक क्रूरता और क्या होगी कि हरम में हुसैन को चैन न मिला उस समय ख़बरें इसी प्रकार फैला करती थीं क्योंकि तब तार टेलीफोन तो थे नहीं रोज़ाना मक्के से यात्री आते–जाते रहते थे। जो अपने देश में आते लोगों से समाचार कहते थे, इस से यह मतलब न था कि वह इमाम हुसैन (अ0) के लिए कोई बड़ी सेना इकटठा हो जाए परन्तु मतलब था– कि पहले से वह घटना सबको भली–भाँति ज्ञात थी कि हुसैन (अ0) की शहादत का कारण यज़ीद का अत्याचार है यदि ऐसा न होता तो शामवासियों को अवसर मिल जाता कि वे सत्य को असत्य और धर्म को अधर्म के रूप में संसार में प्रकट करते जिसका परिणाम यह होता कि हुसैन (अ0) से संसार को सहानुभूति न रहती और न कर्बला की इस घटना में विशेषता पायी जाती परन्तु अल्लाह की माया देखिये– कि इमाम हुसैन (अ0) निर्दोष, बेगुनाह, शहीद हुए और इस बात को संसार ने मान लिया, यज़ीद और उसके कर्मचारियों को यह अवसर न मिल सका कि इमाम हुसैन (अ0) के विमुख कोई बात गढ़ कर फैलाते। इमाम हुसैन (अ0) ने अपनी ज़िन्दगी में इस घटना को बदल दिया था और मक्का छोड़ने का कारण बताकर अपने शत्रुओं को दयालुता दिखाकर चुप कर दिया था संसार की गर्दनें आप ही आप झुक गई थी इससे अधिक धर्म प्रचार क्या हो सकता है।

हुसैन (अ0) के साथी चुपचाप धर्म प्रचारक थे

हज का समय था इराक़ में ताएफ और अरब की दूसरी जगहों के क़बीले मक्के में आ रहे थे उधर इमाम हुसैन (अ0) अपने कुटुम्ब और मित्रों सहित (जिनका समुदाय एक बड़ी सेना की भांति मालूम होता था) मक्के से जा रहे थे यात्री जानते थे हैं कि राह में यदि कुछ यात्री और मिल जाते हैं तो खोज होती है कि यह लोग कहाँ से आये हैं? कहाँ जाएँगे? फिर इमाम हुसैन (अ0) का कुटुम्ब और मित्रों का साथ जो एक सेना की भांति थे और अजीब बात यह कि हज के दो दिन बाक़ी रहे और मक्के की तरफ से आ रहा हो जबकि संसार से लोग मक्के की तरफ हज को जा रहे थे। अवश्य एक अजनबी मनुष्य को यह पूछना ज़रूरी था कि यह किसकी सेना है? कहाँ जा रही है? और हुसैन (अ0) का नाम मालूम होने पर इससे पहले हमने जो बातें लिखी है ज़रूर पूछता। जैसा कि इतिहास की पुस्तकें इसकी साक्षी हैं।

फ़रज़दक़ और हज़रत इमाम हुसैन (अ0) की भेंट एक दिन यूँ ही अचानक हो गई और अब्दुल्ला इब्ने मुती व उमर इब्ने अब्दुर्रहमान भी रास्ते में मिले और फिर उन लोगों में जो बात चीत हुई वह इतिहास से प्रकट है। कहने का अभिप्राय यह है कि हुसैन इब्ने अली (अ0) और हाशिमी जवानों की बड़ी सेना जो काबे को छोड़कर जंगलों में फिर रही थी वह स्वयं धर्म प्रचारक और सत्य पथ पर आरुढ़ थी, जो दूर–दूर के रहने वालों को सत्य बात पूछने पर प्रस्तुत करता था।

''कर्बला की भूमी पर अधर्म प्रचार''

मार्ग की सम्पूर्ण कठिन घटनाओं को

छोड़कर इमाम (अ0) की उस बड़े धर्म प्रचार का सबूत देना चाहते हैं जो कर्बला की भूमी पर हुसैन द्वारा प्रकट हुआ। उस समय जब कि ख़ून के प्यासे 30 हज़ार शत्रु सेना से इमाम का रास्ता और पानी बन्द कर दिया गया था। धर्म और जातीयता ही नहीं बल्कि मनुष्यता और प्रतिष्ठा को छोड़कर इमाम हुसैन (अ0) को मारने पर उद्यत हो गई थी। ऐसों का टेढ़े मार्ग से हटाना असम्भव था जिसको हुसैन (अ0) जानते भी थे लेकिन एक धर्म प्रचारक का कर्तव्य है कि वह सत्य की आवाज़ को ऊँचा करे और अपने कर्तव्य कर्म का भली–भांति पालन करे। इस तात्पर्य को इमाम (अ0) ने ख़ूब पूरा किया।

एक रात के लिये नमाज़ का वक़्त माँगना और इस्लामी क़ायदे का अद्वितीय प्रचार

नौ मुहर्रम को उस वक़्त जब निर्दयी यज़ीद की सेना ने आक्रमण किया और हुसैन (अ0) और उनकी थोड़ी सी सेना को मारने को प्रस्तुत हुए। हुसैन (अ0) ने अपने भाई हज़रत अब्बास (अ0) को भेजकर एक रात की मोहलत माँगी, क्यों? क्या इसलिए कि हुसैन (अ0) अपने कुटुम्ब से बिदा हो लें? अपने अज़ीज़ों को दिल भरकर एक रात और देख लें या एक रात में कोई युद्ध की सामग्री एकत्रित कर लें, नहीं बल्कि सिर्फ़ इसलिए कि आज की रात अल्लाह की प्रार्थना करें। चुनानचे उन्होंने ऐसा ही किया रात इसी तरह बिताई .....इस गिरोह की आवाज़ें अल्लाह की प्रार्थना के साथ इस तरह गूँज रही थीं जैसे शहद की मक्खी के छत्ते से आवाज़ आती है। इस प्रकार इन्होंने दिखला दिया कि कठिन से कठिन समय पर धार्मिक नियमों का पालन किया जाता है और धार्मिक जोश से बढ़कर और कोई जोश शक्ति नहीं रखता।

''दसवीं (आशूर) के दिन ज़ोहर की नमाज़''

पिछले अवसर की अपेक्षा वह कठिन अवसर था जब लड़ाई आरम्भ हो चुकी थी हुसैन (अ0) की छोटी सेना के बहुत से जवान मर चुके थे और सेना क्षीण होने लगी थी। बाणों की वर्षा और कमानों के तड़कने की ध्वनि हो रही थी परन्तु ऐसी दशा में भी ज़ोहर की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की गई और इस नमाज़ की मिसाल दुनिया का इतिहास नहीं ला सकता। इमाम क़िबला की तरफ और आपके साथियों की सफें पीछे और दो बहादुर जवान इमाम के आगे सीना ताने खड़े हैं। कि जो तीर आए उसको अपने सीने पर रोकें जिसका फल यह हुआ कि नमाज़ ख़त्म होते उन दोनों बहादुरों में से एक सईद बिने अब्दुल्लाह ज़मीन पर गिर कर तड़पने लगता है और दुनिया से रुख़सत हो जाता है। यह घटना चुपचाप उस समय हुई परन्तु संसार को सत्य की तरफ बुलाया और मुसलमानों को होशियार किया और दूसरी तरफ यज़ीद और उसके साथियों की निर्दयता को प्रकट कर दिया।

''सत्य धर्म प्रचारक की अन्य घटनाएँ''

दसवी मुहर्रम की सुबह से लेकर सन्ध्या समय तक की घटनाएँ यदि हम लिखना चाहें तो भी यह विषय पूरा नहीं हो सकता। इसका इतिहास ही साक्षी है कि हुसैन (अ0) की सेना का हर जवान स्वयं धर्म प्रचारक था, बुरैर हमदानी की लड़ाई, हबीब इब्ने मुज़ाहिर का यज़ीद की सेना से वार्तालाप, ज़ुहैर इब्ने क़ैन का ख़ुतबा और

तमाम अज़ीज़ों और दोस्तों के वह रजज़ जिनमें से हर एक हुसैन (अ0) की शहादत के कारण बताना एक प्रचारक की भांति था। इसका प्रभाव ज्ञात हो या न हो। परन्तु एक प्रचारक की सफलता यह नहीं है कि उसकी आवाज़ पर हाँ कहने वाले बहुत पैदा हों। बल्कि उसकी सफलता यह है कि कठिन अवसरों पर अपने धर्म का भली–भांति पालन कर सके। हुसैन (अ0) की फौज के तमाम जवान बहादुरी से लड़कर शहीद हो चुके थे और हाशमी ख़ानदान के शेर भी अपने बुज़ुर्ग की हिमायत में काम आ गये, केवल निर्दयता का सहन करने वाले हुसैन (अ0) बाक़ी हैं और शत्रुओं की सेना घेरे हुए है इस पर दुःखों का साथ और आँखों में दुनिया अन्धेरी है परन्तु वह धर्म प्रचारक अपने कर्तव्य को एक क्षण के लिये भी नहीं भूलता।

वह ख़ुतबा पढ़ता है व्याख्यान देता है, रसूल (स0) के सहाबियों को साक्षी बनाकर अपनी हक़ीक़त का सबूत देता है– क्या इस आशा पर कि यज़ीद का लश्कर हुसैन (अ0) की हालत पर रहम खायगा या वह लोग रुपये पैसे के लोभ को त्याग करके सत्य मार्ग पर आ जायेंगे? नहीं, कदापि नहीं, हुसैन (अ0) भोले न थे। वह ख़ूब जानते थे मगर बाख़बर बनाना चाहते थे, उन्होंने कोई बात सच्चाई के प्रकट करने में नहीं उठा रखी और अन्तिम साँस तक अपने कर्तव्य का पालन कर गये।

उस वक़्त भी जब कि शिम्र का ख़न्जर आपकी गर्दन के पास आ चुका था और आप का अन्तिम समय था उस समय भी हुसैन (अ0) ने अपने क़ातिल शिम्र के सामने धर्मप्रचार किया और अपने नाना की सत्यता को प्रकट किया आपने कहा ''मेरे नाना रसूल ने सच कहा था कि तुझे मारने वाला एक कोढ़ी शख़्स होगा।''

ऐ हुसैन इब्ने अली (अ0) आप ने मरते वक़्त तक कर्तव्य को न छोड़ा अपने नाना की बातों को ख़ंजर के नीचे सच कर दिखाया। आपके ख़ून की हर बूँद सच्चे मुसलमानों के दिल में सदा ताज़ा रहेगी और उसे वे कभी न भूलेंगे।

प्रतिष्ठा और मौत की तुलनाः–

जीवन प्यारी वस्तु है और मनुष्य की प्रकृति में दुनिया का प्रेम उत्पन्न किया गया है। मनुष्य इसी के कारण संसार के कठिन से कठिन दुःखों को उठाता है। वह अपनी लज्जा के सामने धन की कुछ परवाह नहीं करता है और हर प्रकार उसकी रक्षा करता है। इस्लाम ने भी इस प्रकृति की बात को नहीं रोका बल्कि जीवन की रक्षा को आवश्यक माना है, लेकिन कभी–कभी ऐसे नाज़ुक अवसर आ जाते हैं कि जब मन के विचार और बुद्धि सम्बन्धी विचारों में झपट हो जाती है। जीवन अपनी अच्छाइयों के साथ इतना डरावना हो जाता है कि मनुष्य बे समझे बूझे मरना पसन्द कर लेता है और इस प्यारे जीवन को जिस पर वह हर वस्तु को न्योछावर करता है कभी नासमझी के कारण जान भी दे देता है जो किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं है परन्तु जिस समय प्राण बचाने से अच्छा मरना हो, और जिस समय जीवन की कठिनाइयों से साबक़ा पड़ता है, और जिस समय प्रतिष्ठा और ज़ाहरी मिटने का प्रश्न आये तो जीवन को मृत्यु पर अच्छा समझना अनुचित है। हमेशगी की ज़िन्दगी के मालिक हो जाने में, प्रतिष्ठाा वाले प्रतिष्ठा का सदक़ा प्राण को समझते हैं। हुसैन इब्ने अली (अ0) ने कर्बला में जो रास्ता नियुक्त किया था वह इन्ही नियमों पर निर्भर था यद्यपि आपकी वाणी कर्बला के मैदान की भूमि पर निकलकर मिट गई परन्तु उसका फल मज़बूत

रहने वाला हुआ।

कर्बला की घटना की विशेषतायें

धैर्य और सहायता देना इन दोनों विशेषताओं को भली भांति कर्बला के लड़ने वालों ने पूरा किया। इनमें से हर एक ने इमाम के जीवन की रक्षा को अपने से बढ़कर जाना। इमाम हुसैन (अ0) मुसल्ले पर जो जुहर की नमाज़ पढ़ रहे हैं और शत्रुओं के बाणों की वर्षा हो रही है सईद इब्ने अब्दुल्लाह और ज़ौहर इब्ने क़ैन सीने को ताने खड़े हैं। अभी नमाज़ पूरी नहीं हुई कि सईद गिर जाते हैं। इस तरह इमाम पर अपने प्राण न्योछावर करते हैं और स्वयं इमाम ने जाति की रक्षा की। अपनी जान बल्कि जान से प्यारी औलाद और अज़ीज़ों की जान और इससे बढ़कर कुटुम्ब की प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया और मरने से पहले तमाम मुसीबतों को उठाया लेकिन दीन इस्लाम को क़ायम कर गये और सुहानुभूति की यह हालत कि अपने हर अज़ीज़ और मित्र के दुखों में सहायक बने। प्रत्येक की मौत के कारण अलग–अलग थे परन्तु जब इमाम की शहादत का ध्यान किया जाता है तो वह तमाम दुःख इनके एक व्यक्तित्व में जमा थे। हुसैन (अ0) उस दिन अपनी जान नहीं दे रहे थे बल्कि संसार को धैर्य और सहायता को न भूलने का सबक़ सिखा रहे थे। कठिन से कठिन दुःखों के होने पर भी न घबड़ाना, दृढ़ता है और इस परीक्षा में कर्बला के लड़ने वालों का नम्बर है इनके दुःख सबसे अलग हैं। गर्दन का कट जाना एक सिपाही के लिए कोई बात नहीं परन्तु तीन दिन का भूखा प्यासा रहकर घायल होना यह बड़ी ही भारी दुःख की बात थी। छोटे बच्चों को बे पानी की मछली की तरह तड़पते देखना अपनी औलाद को तीरोतलवार में भेजना बल्कि अपने हाथ पर जिगर के टुकड़े को तीर का निशाना बनवा देना हर मनुष्य का काम नहीं है। इतनी दृढ़ता का उदाहरणइतिहास में नहीं मिलता। इनकी अदभुत सफलता का मिलना भी असम्भव है। वह मरे नहीं बल्कि हमेशा कि लिए ज़िन्दा हुए और हज़ारों को ज़िन्दा कर गये उनकी याद जब तक इस्लाम बाक़ी है रहेगी। ''अपमान के सहने से मरना अच्छा है'' यही बातें हुसैन (अ0) ने करके दुनिया को दिखा दीं।

नियम की सहायता और बलिदान

हुसैन का बलिदान दुनिया से निराला था। इस बलिदान के प्रबन्ध विचित्र थे। कर्बला के बहादुर हुसैन इब्ने अली (अ0) का नियम सबकी सहायता, इस्लामी नियमों का पालन और निर्दयी शक्ति की समानता में आत्मिक, तथा धार्मिक प्रतिष्ठा की रक्षा थी। इन्होंने अन्तिम साँस तक इस नियम को हाथ से न जाने दिया। वह अगर पहली बार अपनी जान को अर्पण कर देते तो सम्भव था कि यह अधिक प्रशंसनीय न होता। हकीम सुक़रात ने भी अपने हाथ से विष का प्याला पी लिया था और अपने जीवन को किसी अभिप्राय पर बलिदान कर दिया था परन्तु हुसैन इब्ने अली (अ0) का अभिप्राय बहुत कठिन था। वह अपने बलिदान को दुनिया से अलग दिखाना चाहते थे। उनका अभिप्राय यह था कि अपनी हर प्यारी चीज़ अपने हाथ से न्योछावर करें और अन्त में अपने जीवन को भी सत्य पर न्योछावर करें। इन्होंने सबसे पहले स्वदेश के विश्राम को त्यागा जिसके सिलसिले में हर तरह की तकलीफ उठाई। आशूर के दिन बलिदानों की श्रेणी में अपने प्यारे

मित्र साथ के खेले हुए दोस्तों को न्योछावर किया फिर एक एक अज़ीज़ को न्यौछावर किया अपने दायें बाजू की शक्ति हज़रत अब्बास (अ0) को न्यौछावर किया, अपने प्यारे भतीजे और दामाद क़ासिम इब्ने हसन (अ0) को न्योछावर किया अपने सबसे प्यारे बेटे हज़रत अली अकबर (अ0) को कुर्बान किया और अन्त में अपने छः महीने के बेटे हज़रत अली असग़र (अ0) को अपने हाथों पर लाकर न्यौछावर किया अभी तक दिल के टुकड़े न्यौछावर हो रहे थे अब शरीर के अंगों की बारी आई। उनको एक–एक करके न्यौछावर किया। नौबत यहाँ पहुँची कि शरीर पर बाणों को स्थान न मिलता था। तलवारों और नेज़ों से शरीर के टुकड़े टुकड़े हो गये थे। जब शरीर और दिल का प्रत्येक टुकड़ा कुर्बान हो चुका दोस्त और अज़ीज़ों में से कोई बाक़ी न रहा और वे भी न्यौछावर हो चुके। एक एक नेज़े पर सैकड़ों तीर और एक–एक तलवार पर सैकड़ों तलवारें पड़ चुकीं। तीर भी अपना हौसला निकाल चुके अब हुसैन (अ0) के पास सिवाय आत्मा के न्यौछावर करने के और कोई चीज़ बाक़ी न थी। एक सिर और ग्रीवा में सम्बन्ध शेष रह गया था। इन कठिन घटनाओं के बाद सर और गर्दन की जुदाई कोई बड़ी बात न थी। अस्र के होते होते हुसैन (अ0) इस कुर्बानी में भी सफल हुए। और शिम्र के खंजर से जिस्म और गर्दन की जुदाई भी हुई।

आकाश लाखों बरस चक्कर लगाये संसार में अत्यन्त उलटफेर हो जाए लेकिन इतने बड़े प्रशंसनीय बलिदान की मिसाल नहीं पैदा हो सकती।

''हुसैन (अ0) की शहादत के बाद''

बीबी फातिमा (स0) का चाँद छिप चुका है और शत्रु अपने ज़ाहिरी मतलब में सफल हो चुके हैं। अब कूफ़ा और शाम के बाज़ार है और बनी हाशिम के घरों की प्रतिष्ठा–पूर्ण स्त्रियाँ और नेज़ों पर कर्बला में शहीद होने वालों के सर हैं। देखने वाले प्रत्यक्ष में इस दृश्य को रसूल (स0) के कुटुम्ब का बहुत अपमान समझते होंगे परन्तु बात यह है, कि इस समय हुसैन (अ0) का धर्म प्रचार उन्नति पर था अगर ध्यान से देखे तो नेज़े पर हुसैन (अ0) का सर जिसके माथे पर अल्लाह के सजदों का निशान पड़ा हुआ है। चेहरे से नूर प्रकट है होंठ कलामे मजीद पढ़ते हैं दूसरी और प्रतिष्ठा पूर्ण स्त्रियाँ जो इस अजनबियों के गिरोह से नंगे सर, वग़ैर चादर के लज्जा के साथ पवित्रता के लिबास में थीं और इनके वह सच्चाई से भरे हुए ख़ुतबे थे जो सुनने वालों के दिलों को हिला देते थे। यह वह चीज़ें हैं जिन्होंने सच्चाई के शरीर में जान डाल दी। समय के सामने मूर्खता और कमीनेपन को प्रकट कर दिया संसार को पूरब से लेकर पश्चिम तक हुसैन इब्ने अली (अ0) का रोने वाला और यज़ीद के कर्तव्य एवं कर्म से घृणित कर दिया। इसका फल यह था कि आज संसार के कोने–कोने में हुसैन (अ0) का नाम है और हिजाज़ का हक़ीक़ी बादशाह करोड़ों लोगों की क़यामत तक हुकूमत कर रहा है और बनी उमैया के अन्याय का दीपक ऐसा बुझा कि अब नाम लेने वाला भी नहीं। संसार ने देख लिया कि ज़ालिम कौन है और अन्याय का सहने वाला कौन है। अन्याय के सहने का फल क्या होता है और निर्दयता को सहने की क्या प्रतिष्ठा होती है।

इति शुभम

ला-इला-ह इल-लल्लाह की बुनियाद

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद

हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने अपनी अज़ीम कुर्बानी के ज़रिए से जो कर्बला के मैदान में पेश हुई हक़ को बातिल से पूरी तरह अलग कर दिया। किसी दलील से वह बात हासिल न हुई जो आपके इस अमल से हासिल हुई।

इमाम हुसैन (अ0) ने हक़ के रास्ते में हर वह कोशिश की जो कोई इंसान कर सकता था और हर मुसीबत पर इन्तिहाई बहादुरी के साथ साबित क़दम रहे। आप रसूल (स0) के नवासे थे। हज़रत अली (अ0) के जिगर के टुकड़े और जनाब फातिमा ज़हरा (स0) के नूरे नज़र थे। पैग़म्बरे इस्लाम ने अपने इस नवासे को अपनी ज़बान चुसाकर पाला था और अपनी तरबियत के गोद में परवरिश फरमाई थी। हुसैन अपने नाना की तस्वीर थे। आपके अख़लाक़ और आदतें पैग़म्बरे अकरम का आईना थीं। इस्लाम पर वह वक़्त बहुत मुश्किल था जब उसकी रसूल (स0) के हाथों मक्का में शुरुआत हो रही थी। उस ज़माने में हज़रत सरवरे काएनात (स0) को जिन तकलीफों और मुश्किलों का सामना करना पड़ा वो तारीख़ का एक ख़ूनी बाब है मगर इस्लाम के लिए वह वक़्त भी किसी तरह अपनी दुश्वारी और हौलानाकी में कम अहमियत वाला न था जब रसूले अकरम (स0) की तेईस साल की मेहनत और कोशिश तबाही और बर्बादी के दरवाज़े पर पहुँच चुकी थी। जब इस्लाम की नक़ाब डालकर उसके बदतरीन दुश्मन उसकी जड़ों को खोखला कर रहे थे। जब इस्लामी रूप में लात व उज़्ज़ा के परस्तार तौहीद की बुनियादों को हिला रहे थे जब दरबारे हुकूमत बुराई का अड्डा बन चुका था और यज़ीद की जिन्सी हवस से उसके महारिम भी महफ़ूज़ न थे जब अज़ान की आवाज़ें नाच–गानों और घुंघरुवों की आवाज़ में दब चुकी थीं हिदायत और नसीहत की महफिलों के बजाए शराबों की महफिलें सजी हुई थीं। रसूल (स0) के सहाबियों की बेइज़्ज़ती करना, उनको झुठलाना और उनका ख़ून बहाना जायज़ बना दिया गया था। अहलेबैत की बेइज़्ज़ती की गई और जो उनको सख़्त तकलीफें पहुँचाई गईं वह कभी भुलाइ नहीं जा सकतीं। इन हालात में एक सच्चे ख़ुदा को मानने वाले और पक्के मुसलमान का क्या फर्ज़ था और हक़ के कलमे को बुलन्द करने में उसको क्या करना चाहिए था। क्या ऐसे वक़्त में ख़ामोश बैठे रहना और अपनी जान व माल और अपने घर वालों की हिफाज़त व सलामती को इस्लाम के बाक़ी रहने से आगे रखना इस्लामी नज़रिये से सही था! हर गिज़ नहीं। हुसैन (अ0) ने वही किया जो उनका फर्ज़ था और जो ऐसे नाज़ुक

वक़्त में उनको करना चाहिए था, कूफ़ा के लोगों ने आपके नाम हज़ारों ख़त भेजे थे जिनमें रसूल (स0) के नवासे से दरख्वास्त की गई थी कि वह वहाँ तशरीफ ले जाकर मुसलमानों की हिदायत फरमाएँ और उनको यज़ीद की बुराईयों से नजात दिलाएँ। बड़े–बड़े मशहूर मुसलमानों के ख़तो पर दस्तख़त मौजूद थे जिनमें कुछ रसूल (स0) के सहाबी भी शामिल थे। इन दरख़्वास्तों में यह अलफाज़ मौजूद थेः–

''हमारे लिये यहाँ कोई हिदायत करने वाला मौजूद नहीं है जो हमें सही और ठीक रास्ता दिखा सके आप तशरीफ लाइये। ख़ुदा आपके ज़रिये से हम सबको हिदायत और हक़ पर इकटठा कर देगा।''

इमाम हुसैन (अ0) ने इन सारे ख़तों का जो जवाब दिया था उसमें यह लिखा थाः–

''मैं इस बात को पूरी तरह समझ गया हूँ जो आप लोगों ने लिखी है कि हमारी हिदायत के लिए कोई इमाम और हाकिम मौजूद नहीं है। तो मैं इसके जवाब में अपने भाई और अपने चचा के बेटे और अपने ख़ानदान के एक भरोसे व एतेमाद वाले शख़्स मुस्लिम बिन अक़ील (अ0) को आपके पास भेज रहा हूँ, अगर इन्होंने मुझे लिखा और इसकी ख़बर दी कि आपके बड़े और राय वाले इस मामले में एक हैं और उनमें किसी तरह का इख़्तेलाफ मौजूद नहीं है जैसा कि इन दरख़्वास्तों में आपने ज़ाहिर किया है तो मैं बहुत जल्द वहाँ पहुँच जाऊँगा।''

बेशक इमाम तो सिर्फ वही है जो अल्लाह की किताब के मुताबिक़ हुक्म देता हो, जो अद्ल व इन्साफ और दीने हक़ पर क़ायम हो और सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ुशी के लिए ख़ुदा के हर हुक्म का पाबन्द हो।

मक्का के एक बड़े जलसे में अपने इराक़ रवाना होने से एक दिन पहले इमाम हुसैन (अ0) ने जो ख़िताब फ़रमाया था उसमें यह अलफाज़ भी थेः–

''मौत आदम की औलाद के गले का हार है। मुझे अपने बुज़ुर्गों से मिलने का बहुत शौक़ है और यह शौक़ वैसा ही है जैसा याक़ूब (अ0) को यूसुफ (अ0) की मुलाक़ात का था। मेरे लिये वही ख़्वाबगाह पसन्द की गई है जहाँ मैं जाने वाला हूँ जैसे मैं अपने बदन के हिस्सों को देख रहा हूँ जिनको नवावीस और कर्बला के दरमियान वह्शी और ज़ालिम दुश्मन टुकड़े–टुकड़े कर रहे हैं। और अपने इस अमल से अपने ज़ुल्म व सितम की भूख को दूर कर रहे हैं। जिसको तक़दीर के क़लम से लिख दिया गया है उस दिन से किसी को छुटकारा मुमकिन नहीं। जो ख़ुदा की चाहत वही हम अहलेबैते रसूल की मर्ज़ी है हमको मुसीबतों पर सब्र करना है। इसके बाद आप ने फरमायाः जो शख़्स हमारे रास्ते में अपनी जान क़ुर्बान करना चाहता हो और मौत पर कमर कस चुका हो वह हमारे साथ रवाना हो जाए क्योंकि मैं इन्शाअल्लाह कल सुब्ह कूफा के लिये रवाना हो जाऊँगा।''

इमाम आली मक़ाम ने एक ख़त बसरा वालों के नाम भी लिखा जिसमें लिखा थाः

''मैं आप लोगों को ख़ुदा और उसके रसूल (स0) की तरफ दावत देता हूँ क्योंकि नबी

की सुन्नत अब तबाह हो चुकी है।''

हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने दुनिया की हर राहत को दीन के फैलाने और इस्लाम के बाक़ी रखने के लिए छोड़ दिया था और इस रास्ते में हर चीज़ यहाँ तक कि अपनी महबूब औलाद को भी कुर्बान करने के लिये तैयार थे उनका मक़सद सुधार था और मख़लूक़ की हिदायत। उनके दिल में बादशाहत की हवस न थी वह सलतनत और तख़्त व ताज की ख़्वाहिश न रखते थे अगर उनकी गरज़ दुनिया होती तो वह यज़ीद से इख़्तेलाफ न करते और कुछ शर्तों के साथ उसकी बैअत कर लेते जो बहुत आसान मामला था और इसके नतीजे में इमाम हुसैन (अ0) दुनिया के बहुत से फायदे हासिल हो सकते थे। मगर आपने ख़ुदा के दीन की हिफाज़त के रास्ते में किसी राहत व आराम की परवाह न की और किसी धमकी से न डरे और उस फर्ज़ को पूरा किया जो इस्लाम और दयानत की तरफ से उन पर लाज़िम होता था। आपने अपने छोटे भाई मुहम्मद बिन हनफिया को चलते वक़्त जो वसीयत फरमाई थी, उसमें फरमाया थाः–

''यानी मैं ऐश व आराम की हवस में और ज़ुल्म व फसाद की ख़्वाहिश लेकर यह सफर नहीं कर रहा हूँ बल्कि मेरा मक़सद सिर्फ यह है कि मैं अपने नाना की उम्मत की हिदायत करूँ। उन्हें बुराईयों से मना करूँ और वही तरीक़ा इख़्तियार करूँ जो मेरे नाना हज़रत रिसालतमाब और बाबा अली मुर्तज़ा (अ0) का था और उनकी सीरत पर चलूँ इसके बाद जो मेरी बात को हक़ जानकर क़बूल करेगा तो उसको हिदायत हासिल होगी और जो मेरी बात को रद्द करेगा तो मैं उस पर सब्र करूँगा। यहाँ तक कि ख़ुदा मेरे और उस क़ौम के दरमियान हक़ के साथ फैसला फरमाएगा।''

आशूर की सुब्ह नज़दीक है। शब का हैबतनाक सन्नाटा कर्बला के रेगिस्तान पर छाया हुआ है। बच्चे प्यास और भूख से बेहाल पड़े हैं। अन्सार व अहलेबैत के मुक़द्दस ख़ेमों से तस्बीह व तहलील की आवाज़ें आ रही हैं। इधर इब्ने ज़ियाद की ज़ालिम फौजें इन चन्द नेक इन्सानों को घेरे हुए हैं और इनका ख़ून बहाने के लिये बेचैन हैं। एक तरफ ज़ुल्म का शौक़ है, हुकूमत की ख़्वाहिश है, मुल्क व दौलत की हवस है, नशा व सलतनत का घमण्ड है, दुनिया परस्ती और ख़ुदा को भूल जाना है और दूसरी तरफ शहादत का शौक़ है, ख़िदमत की ख़्वाहिश है, अल्लाह की इबादत व इताअत का जज़्बा है। ख़ुदा परस्ती और दीनदारी है। हर तरफ ख़ामोशी ही ख़ामोशी है। ख़ौफ व दहशत ने फरात के साहिल के हर ज़र्रे को घेर लिया है।

इमाम हुसैन (अ0) इन्सानी ज़मीर को जगा रहे हैंः ऐ मेरे साथियों! ऐ मेरे घर वालों! ऐ मेरे वफादार दोस्तो! इस रात को ग़नीमत समझो! इस अंधेरे और सन्नाटे से फायदा उठाओ! और जहाँ दिल चाहे चले जाओ। मैं तुम्हें अपनी इताअत और बैअत से आज़ाद करता हूँ क्योंकि मेरे दुश्मन मेरी जान के अलावा किसी दूसरे को नहीं चाहते और अगर वह मुझे क़त्ल करने में कामियाब हो गए तो फिर उनको किसी और की फिक्र बाक़ी न रहेगी। इसलिए मेरे अज़ीज़ दोस्तो! तुम अपनी जान क्यों खोते हो अपने रिश्तेदारों और साथियों को क्यों तकलीफ में डालते हो मुझे

अकेला इस रेगिस्तान में छोड़कर जिधर दिल चाहे चले जाओ मैं दुश्मन की तलवार का अकेले मुक़ाबला करूँगा और अगर तुमको यह ख़याल है कि तुम्हें जाते हुए कोई देख लेगा और सबके सामने वापस जाने पर तुमको शर्म आती है तो लो! यह शमा भी बुझाए देता हूँ। अब तो अंधेरा हो गया! हाथ को हाथ नहीं सूझता! कोई किसी को नहीं देख सकता। अपने अज़ीज़ों का हाथ पकड़ो और यहाँ से चले जाओ। दुनिया ऐसे मौक़े पर साथियों को तलाश करती है और लश्कर को बढ़ाती है। मगर इमाम हुसैन (अ0) साथियों को रुख़सत कर रहे हैं और तादाद कम कर रहे हैं। इसलिए कि वह सलतनत और हुकूमत को नहीं चाहते थे, उनकी नज़र दुनिया की चाहत पर न थी। वह दीन चाहते थे वह हक़ को बातिल से अलग करना चाहते थे और इसीलिए साथियों की उस बड़ी तादाद को नहीं चाहते थे जिसमें ईमान न हो ऐसे बहुत बड़े लश्कर की उनको चाहत न थी जिसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ न हो और जो आख़रत व हिसाब के दिन (क़यामत) पर यक़ीन न रखता हो। वह चाहते थे कि जो मैदाने शहादत में जाए वह दयानत और हक़ के सच्चे और पाक जज़्बे को लेकर जाए वह सच्चे और पक्के दीनदारों को चाहते थे चाहे उनकी तादाद कितनी ही थोड़ी हो यहाँ तक कि वह इस पर भी तैयार थे कि उनके तमाम साथी उन्हें अकेला छोड़कर चले जाएँ। मगर वह ऐसे साथी अपने साथ नहीं रखना चाहते थे जो किसी क़ीमत पर भी ख़रीदे जा सकते हों। इमाम का यह जोश भरा बयान सुनकर अन्सार और क़रीबी लोगों ने चीख़ें मारकर रोना शुरु कर दिया। और हर एक कहने लगाः रसलू (स0) की यादगार! फातिमा (स0) के बेटे! हमें आख़िर किस दिन के लिए अल्लाह ने पैदा किया है। सैकड़ों बार हमें क़त्ल किया जाए और फिर ज़िन्दगी मिले जब भी हम हर बार हुज़ूर के सामने शहादत की इज़्ज़त हासिल करेंगे और कभी इस ख़िदमत से मुँह नहीं मोड़ेंगे। इमाम (अ0) ने दुनिया को दिखाया कि उनके साथी कैसे वफादार थे, कैसे सच्चे थे और कैसे ख़ुदा तरस थेः

''मैंने ऐसे वफादार साथी नहीं देखे जैसे मेरे साथी हैं।''

आपका मशहूर शेर हैः

अलमौतु औला मिन रुकूबिलआरि
वल आरु औला मिन दुख़ूलिन्नारि

''बेइज़्ज़ती बर्दाश्त करने से मौत बेहतर है। और जहन्नम की आग में जाने से दुनिया की बेइज़्ज़ती और ज़लालत बर्दाश्त कर लेना अफज़ल है।''

इमाम हुसैन (अ0) ने हमको इन्सान के सर की क़ीमत बताई है। उन्होंने हमको एहसासे बरतरी के तरीक़े सिखाए हैं। इन्सानियत की तारीख़ में एक कभी न ख़त्म होने वाली जगह दी है। उसूल व क़ाएदे के क़ानून समझाए हैं। उन्होंने इन्सानी ज़मीर से मौत और क़ैद का ख़ौफ हमेशा के लिये दूर कर दिया और अपने अमल से दिखा दिया कि दयानत और हक़ की हिफाज़त के लिए बड़ी से बड़ी हुकूमत से टक्कर क्योंकर ली जाती है।

''सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन

(ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह0)



हक़ और बातिल की जंग

सफ़वतुल उलमा मौलाना सै0 कल्बे आबिद नक़वी साहब ताबा सराह

हक़ व बातिल में जंग जारी है और यह जंग उस वक़्त तक बाक़ी रहेगी जब तक इमामे आख़िर की तलवार बातिल को जड़ से उखाड़ कर न फेंक दे। इस मुख़ालेफत की शुरुआत शैतान के जनाबे आदम (अ0) को सजदा न करने से हुई। जिसके बाद से कोई ज़माना ऐसा नहीं मिलता जिसमें यह जंग जारी न हो। कभी बातिल के पुजारी क़ाबील ने हाबील को मौत के घाट उतारा। कभी जनाबे यूसुफ (अ0) को भाईयों के हाथों तकलीफें बर्दाश्त करनी पड़ीं। ज़करिया (अ0) पर आरे चले, यह्या (अ0) का नाहक़ ख़ून बहा, मूसा (अ0) को शहरों की खाक छानना पड़ी, अय्यूब (अ0) को मुसीबतों का शिकार होना पड़ा, ईसा (अ0) को (ईसाईयों के बक़ौल) सूली दी गई। गरज़ हक़ के हर अलमबरदार को मुसीबतों का शिकार होना पड़ा। हर सुधार करने वाले को शैतानी ताक़तों के पुजारियों से जान बचाना दुश्वार हो गई। मगर जीत आख़िरकार हक़ ही की होती रही। हमेशा बातिल के चाहने वाले हक़ के तरफदारों पर ज़ुल्म करके थक गये। लेकिन हक़ का ही बोलबाला रहा।

क़ाबील, हाबील को क़त्ल करके ख़ुद शर्मिन्दा हुआ। यूसुफ (अ0) के भाई उनके सामने सजदा करते नज़र आये। ज़हर ने सुक़रात को तो मौत की नींद सुला दिया मगर क़ौम के लिए आबे हयात का काम किया। ज़करिया (अ0) का नाम मज़लूमों की फेहरिस्त में ऊपर है और क़ातिलों पर आज भी लानत होती है। यह्या (अ0) के नाहक़ ख़ून का जोश उस वक़्त तक न थमा जब तक के बनीइस्राईल की क़ौम से सत्तर हज़ार गले न कट गये, मूसा (अ0) कामियाबी के साहिल से मिल गये और फिरऔन ने अज़ाब की लहरों की गोद में जगह पाई। ईसा (अ0) आसमान पर पहुँच गये। यहूदियों को ज़मीन पर सर छुपाने की जगह नहीं मिलती। ग़रज़ हक़ व बातिल में हमेशा जंग होती रही और ज़ाहिरी शान व ताक़त के बाद भी बातिल ही की हार होती रही। चुनानचे एक ऐसा ही नज़ारा कर्बला के मैदान में सामने आया जिसमें एक तरफ कुछ हक़ के मानने वाले नंगे सर और दूसरी तरफ बातिल के पुजारी हज़ारों की तादाद में सफें बनाए हुए थे। बातिल के पुजारियों ने दुनियावी कुव्वत व ताक़त के बल बूते पर इन्तिहाई ज़ुल्म व सितम तोड़े और हक़ के मानने वाले सब्र करके तमाम मुसीबतें झेल गये। बर्दाश्त न होने वाली मुसीबतें बर्दाश्त करते गये। मगर हक़ के रास्ते से एक इंच न हटे।

कर्बला के वाक़ेए से पहले भी तमाम जंगें हक़ व सच्चाई ही के रास्ते में हुईं, तमाम कुर्बानियाँ उन्हीं के नाम पर चढ़ाई गई थीं।

लेकिन कर्बला के मरने वाले कुछ ऐसा मेयार बना गये जिनके बाद पिछले कारनामे बहुत हलके नज़र आते हैं।

जनाब आदम (अ0) को शैतान के मुक़ाबले में यक़ीनन ज़बरदस्त कामियाबी हुई। मगर ख़ुद उनके क़दम भी सब्रो रिज़ा के रास्ते से डगमगा गये और जन्नत छोड़ना पड़ी।

नूह (अ0) की कश्ती तबाही के समुन्द्र से

बचकर किनारे पर सलामती से पहुँची, मुख़ालिफ़ डूब कर फना हो गये। मगर बाप की मुहब्बत ऐसी छायी कि आख़िर क़ुदरत को झिड़कना पड़ा ''लैसा मिन अह्लिका इन्नहू अमलुन ग़ैरु सालेह'' (वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं है उसके आमाल नेक नहीं थे।)

यूसुफ (अ0) भी तरके औला करने वाले पाये गये। जिस पर नुबुव्वत उनकी नस्ल से भाई की नस्ल में चली गई। मूसा (अ0) ने बहुत तकलीफें बर्दाश्त कीं मगर एक वक़्त उनके दिल पर भी ख़ौफ और दहशत की हुकमरानी थी। जिस पर क़ुदरत की आवाज़ गवाह है। ईसा (अ0) की क़ुर्बानी यक़ीनन क़द्र की जाने वाली है मगर वह भी एलिया से फरियादी थे। जनाब अय्यूब (अ0) ने बहुत तकलीफें बर्दाश्त कीं लेकिन बीवी के बालों पर नामहरम की नज़र पड़ जाने से उनका भी सब्र का पैमाना भर गया।

इन सबके मुक़ाबले में जब हुसैन इब्ने अली (अ0) के सब्र व इस्तेक़लाल, क़ुबानी की अज़मत ख़ुदा की मर्ज़ी पर ख़ुश रहने को देखा जाता है तो ज़मीन व आसमान का फर्क़ नज़र आता है कर्बला के मारके के सामने गुज़िश्ता कारनामें कारनामा कहने के लायक़ नहीं है। वह आदम (अ0) थे कि क़दम डगमगा गए और यह हुसैन (अ0) थे कि इंक़िलाबी ज़लज़ले आकर गुज़र गये मगर मज़बूत क़दम न डगमगाए बक़ौल हज़रत शायर इज्तेहादी–

ज़लज़ले आएँ हिले अर्शे ख़ुदा मुमकिन है
क़ल्बे शब्बीर (अ0) लरज़ जाए ये नामुमकिन है

मूसा (अ0) फिरऔनियों के ख़ौफ से डर जाएँ, हुसैन (अ0) के तो छः महीने के बच्चे ने भी मौत का मुसकुरा कर स्वागत किया। नूह (अ0) को बेटे की मुहब्बत बेचैन कर दे। मगर हुसैन (अ0) के गुलाम हुर भी बेटे को ख़ाक व ख़ून में लिपटा हुआ देखकर ख़ुश होते हैं। ईसा (अ0) अपनी ज़ाती क़ुर्बानी पर ख़ुदा से फरियाद करने लगें, मौत को देखकर परेशान हो जाएँ जिस पर इन्जील गवाह हैः

''फिर वह सख़्त परेशानी में फंस कर और भी दिल से दुआ माँगने लगा और उसका पसीना जैसे ख़ून की बड़ी–बड़ी बूँद बनकर ज़मीन पर गिरने लगा।'' (लौक़ा 24/45) बहुत ज़्यादा हैरान परेशान होने लगा। और उसने कहाः मेरी जान बहुत ग़मग़ीन है।

यसूअ् की आख़री दुआः और वह थोड़ा आगे बढ़ा और ज़मीन पर गिरकर दुआ माँगने लगा कि अगर हो सके तो यह घड़ी मुझ से टल जाए और कहा कि ऐ बाप तुझ से सब कुछ हो सकता है इस बला को मुझ से हटा ले। (मरक़स 14/26)

इसके मुक़ाबले में इमाम हुसैन (अ0) हर जगह पर फरमाते जाते थे। जैसे–जैसे शहादत का वक़्त क़रीब होता जाता था मुबारक चेहरे पर ख़ून दौड़ता जाता था। घर भर को लुटाकर भी ख़ुदा के शुक्र के सिवा कोई बात ज़बाने मुबारक से नहीं निकली।

हर उस्ताद का इम्तिहान उसके शार्गिद से लिया जा सकता है अगर इस नज़रिये के मातहत हम हुसैन और ईसा का मुक़ाबला करें तो उधर ख़ुद मसीह अपने बारह हवारियों से कहते नज़र आएँगे।

जब शाम हुई तो वह बारह शार्गिदों के साथ खाना खाने बैठे। और जब वह खा रहे थे तो उनसे कहा मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़ायेगा उस वक़्त यसूअ् ने कहा कि तुम सब मेरे बारे में ठोकरें खाओगे।

चुनानचे यहूदा ने जो उन बारह में से

एक था, उसने आकर खुद को गिरफ्तार कराया। जब यसूअ् गिरफ़्तार हुआ तो सारे शार्गिद छोड़कर उसे भाग गए। (मता बाब 26)

मगर एक नौजवान जो अपने बदन पर बारीक चादर ओढ़े था उसके साथ हो लिया। मगर जब उसे लोगों ने पकड़ा तो वह चादर छोड़ के नंगा भागा। (मरक़स 14/52) अपने पितरस हवारी से कहा कि तू मुर्ग़ के दोबारा अज़ान देने से पहले तीन बार मेरा इन्कार करेगा। (30/14) पितरस लानत करने और क़सम खाने लगा कि मैं यसूअ् को नहीं जानता।

यह ईसा के साथी हैं जिनके बारे में खुद जनाब ईसा (अ0) गवाही दे रहे हैं कि तुम सब ठोकरे खाओगे। उन्हीं में से एक जान के ख़ौफ से लानत पर आमादा हो गया। इन्हीं बारह हवारियों में जो यसूअ् की तमाम उम्र की मेहनत का नतीजा थे एक यहूदा भी निकला जिसने मुख़बरी करके मसीह को गिरफ़्तार कराया और जिसको मसीह के क़त्ल का सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार क़रार दिया जा सकता है।

मगर हुसैन (अ0) के बहत्तर साथियों में एक भी यहूदा न निकला। हालाँकि इनमें से कुछ ऐसे थे जिनको इमाम की सोहबत से सिर्फ कुछ ही दिन तक फाएदा उठाने का मौक़ा मिला था। और कुछ ऐसे भी थे जिनको इमाम (अ0) की सोहबत में सिर्फ कुछ घण्टे ही हुए थे। (जैसे हुर व वहब कलबी) वह अय्यूब (अ0) थे कि बीवी के बालों पर ग़ैर की नज़र पड़ जाने से बेक़रार हो गये। लेकिन हुसैन इम्तिहान के मैदान में बहनों, बेटियों के सर खुल जाने पर भी राज़ी हो गए। मेरी इज़्ज़त का पर्दा रहे या न रहे मगर उम्मत की पर्दापोशी हो जाए।

इसीलिए हम कर्बला की जंग को हक़ व बातिल की बड़ी जगं और कर्बला के शहीद को सैय्यदुश्शोहदा का लक़ब देते हैं।

और यही वजह थी कि तमाम दूसरी कुर्बानियों और शहादतों के असर महदूद रहे। लेकिन कर्बला की जंग के फाएदे ना महदूद।

यहाँ तक कि हम बारगाहे रिसालत में हाथ फैला कर सवाल कर सकते हैं कि ऐ रसूलुल्लाह (स0) यक़ीनन आपने इस्लाम के फैलाने में बहुत तकलीफें और परेशानियाँ बर्दाश्त कीं। और उनका नतीजा अच्छी तरह सामने आया यानि इस्लाम पूरे ज़ज़ीरए अरब में फैल गया। मगर फिर भी आपकी कोशिशों के नतीजे एक महदूद ज़माने पर ख़त्म हो रहे थे और इधर रसूल (स0) की आँख बन्द हुई, उधर इस्लाम के उसूल व फुरूअ में बदलाव शुरु हो गया। यहाँ तक कि बातिल के अलमबरदार यज़ीद ने इस्लाम की ज़ाहिरी तस्वीर को भी मिटाना चाहा। और वह यक़ीनन अपने इरादे में कामियाब हो जाता अगर आप के जिगर के टुकड़े आपकी गोद के पाले हुसैन इब्ने अली (अ0) ने अपनी ख़ुशी से इस्लाम के पेड़ की सिंचाई न कर दी होती।

मगर इधर तो हुसैन (अ0) ने ख़ंजर के नीचे मुसकुरा कर जान दी और उधर इस्लाम के मुर्दा जिस्म में रूह दौड़ गई।

हुसैन (अ0) ने अपनी और अपने छोटे से लश्कर की कुर्बानी देकर इस्लाम को बचा लिया। अब हुसैन (अ0) के खून से सींचा हुआ इस्लाम ख़त्म नहीं होने वाला है। क़यामत तक कोई ताक़त इसको मिटा नहीं सकती, मिटाने वाले खुद मिट जाएँगे और इस्लाम का बाग़ फलता फूलता रहेगा।

इस्लाम की फितरत में कुदरत ने हुसैन (अ0) के हाथों वह लचक दे दी कि अबः

उतना ही ये उभरेगा जितना कि दबाएँगे

□□□

हुसैनियत क्या है?

अल्लामा जज़ाएरी आयतुल्लाह मुफ्ती सै तैय्यिब आग़ा साहिब
अनुवादकः मुहम्मद काज़िम मेहदी

किसी ज़ात की तरफ निस्बत देना पिछले ज़माने से चला आ रहा है जिस शख़्स में कोई ख़ुसूसियत और कमाल हो लोग उस से ख़ुद को जोड़ना फख़्र समझते हैं जो बज़ाहिर तीन गिरोह हैः

1– उस कमाल वाली ज़ात की औलाद
2– उसके कमाल से असर लेने वाले
3– उसकी सीरत पर चलने वाले

हम भी इसका दावा करते हैं कि हम हुसैनियत के अलमबरदार हैं! देखना है कि यह दावा कहाँ तक ठीक है अगर हम ये दावा इसलिए करते हैं कि हम उनकी औलाद हैं तो यह सिर्फ हुसैनी सादात तक हक़ बात है वह भी उस सूरत में कि जब बाप और बेटे के तरीक़े एक जैसे हों वरना अगर यह सूरत हो कि हुसैन (अ0) तो इन्साने कामिल हों और उनकी औलाद अपनी तौर तरीक़े से जानवारों तक को शरमाए तो यक़ीनन ऐसी औलाद से उसके पूर्वजों को तकलीफ होगी और उसका इस गन्दगी से उस पाक व मुक़द्दस ज़ात की तरफ ख़ुद को जोड़ना बहुत बड़ी हटधर्मी समझी जाएगी।

और अगर हमारा हुसैनियत का दावा दूसरी वजह से है यानि हम हुसैन (अ0) के कमाल के मानने वाले हैं और उनकी जाँबाज़ी से मुतास्सिर हैं लेकिन यह एतेराफ व तास्सुर किसी अमल के जज़्बे से ख़ाली है तो फिर माफ कीजियेगा कि इस लेहाज़ से बड़े हसुैनी शिम्र, हुरमला, इब्ने सअ्द, इब्ने ज़ियाद और यज़ीद माने जयेंगे। क्योंकि उन्होंने हुसैन (अ0) के बेमिसाल कारनामे को अपनी आँखों से देखा था हुसैन (अ0) के इरादे और मज़बूती के पहाड़ से ख़ुद टकराए थे इसलिए उन से बढ़कर कमाल व सिबाते हुसैनी का एतेराफ किसको होगा इसी एतेराफ व तास्सुर का नतीजा था कि यज़ीद व सअ्द के लड़के की आँखों से भी आँसू बह निकलते थे। मगर यह आँसू मगरमच्छ के थे। इसलिए आज इन ज़ालिमों को कोई भी हुसैनी नहीं कहता। हुसैन (अ0) की शराफत से ख़ुद शिम्र इतना मुतास्सिर था कि उसने इब्ने साद के ख़ेमे में अपनी ढाल पर हुसैन (अ0) का सर रख कर जब पेश किया तो यह शेर पढ़ा जिसका मतलब हैः

''मेरे दामन को सोने चाँदी से भर दे क्योंकि मैंने लोगों में से सबसे अच्छे इन्सान को मारा है।''

लेकिन उसका यह इक़रार व तास्सुर कोई क़ीमत रखता है? जबकि उसने हुसैन (अ0) के गले पर छुरी चला दी।

अब रहा तीसरा गिरोह वो तो बेशक ख़ुद को हुसैनी कह सकता है वह हुसैनियत का अलम ऊँचा कर सकता है। वह हुसैनियत का तोहफा अपनी सीने पर सजा सकता है लेकिन शर्त यही है कि उसके रोएँ–रोएँ से हुसैनियत की किरनें फूट कर निकल रही हों। उसकी हर बात और उसका हर काम आशूर की दोपहर को चमकने वाले सूरज की किरनों से रौशनी हासिल करे। क्योंकि आशूर के आफताब के चश्मे ने तो यह

देखा कि कर्बला के हुसैनियों ने ठीक दोपहर को अपने ज़ख़्मी हाथों से कर्बला की मिट्टी पर तयम्मुम किया और तलवारों के साये में कर्बला की गर्म ज़मीन पर अपनी पेशानी रख दी आफताब तो अब भी वही है मगर आज कितने हुसैनी हैं जो वक़्त पर नमाज़ पढ़कर हुसैन की सीरत का नमूना बनते हैं?

आशूर के सूरज ने देखा कि हुसैन (अ0) के जाँबाज़ हुसैन के आगे सीना फैलाए थे। तीर आ–आ कर उनके नाज़ुक सीनों को छलनी कर रहे थे मगर वह मरते दम तक हुसैन (अ0) के आगे से न हटे। आज हुसैन (अ0) तो हमारे सामने नहीं है मगर हुसैनियत ज़रूरत मौजूद है यानि वह अज़ीम मक़सद हमारे सामने है जिसके लिये हुसैन (अ0) ने यह अपनी क़ुर्बानी पेश की। यह मक़सद आज भी ख़तरे में है। इस पर तीर बरसाए जा रहे हैं आज के हुसैनियों में है कोई जवान जो तीरों के सामने सीना तान कर सईद और ज़ुहैर बन जाए। दुनिया जानती है कि जंग में दुश्मन पर ग़ालिब आने के लिये धोका जाएज़ है। इस्लाम ने भी इसकी इजाज़त दी है बल्कि जंग नाम ही धोका दही का है लेकिन क्या कभी तुमने सुना कि कर्बला के हुसैनियों ने भी अपने दुश्मन को धोका दिया उन्होंने अपने मुख़तसर साथियों के बाद भी अपने इस जाएज़ हक़ को इस्तेमाल नहीं किया न धोका दिया न उन पर रात को हमला किया, दुश्मन उनकी पकड़ में आ–आ कर निकल गया। खुद शिम्र ज़ुहैर के निशाने पर आ चुका था और ज़ुहैर के बाज़ू की ज़रा सी हरकत से उसका काम ख़त्म था मगर इमाम (अ0) ने इजाज़त न दी क्योंकि कर्बला के हुसैनी आशूरा के दिन अपने जाएज़ हुक़ूक़ को कम में लाने के लिए नहीं इकटठा हुए थे बल्कि उनका अहम मक़सद तो यह था कि आज हम से वाजिब व मुस्तहब के अलावा कोइ काम ही न होगा। लेकिन आज जब कि धोकादही व ग़द्दारी यक़ीनन हराम है। सगा भाई अपने सगे भाई के धोखे का शिकार है, कर्बला के हुसैनी मरने में एक दूसरे से आगे बढ़ रहे थे। इसलिए नहीं कि वह हंगामे से निकल जाना चाहते थे बल्कि इस लिये कि कहीं वह अपनी आँखों से अपने साथियों का ताज़ा ख़ून न देखें। और आज भाई, भाई के ख़ून का प्यासा है। कर्बला के हुसैनियों ने सारी रात क़ुर्आन की तिलावत में गुज़ारी और जब सुब्ह को जंग शुरु हुई तो कितने हाफिज़ाने क़ुर्आन थे जो तलवारों के साये में झूम–झूम कर क़ुर्आन की तिलावत करते जाते थे और शहादत का जाम पीते जाते थे और आज क़ुर्आन पर यूँ गर्द जमी है जैसे किसी मासूम यतीम का चेहरा गर्द में भरा हुआ हो, कर्बला के हुसैनियों ने इमाम के साथ आशूर की रात जो वादा किया था उसको अपनी जान की बाज़ी लगाकर पूरा किया अगर ज़बान से यह कहा कि ऐ हुसैन (अ0) हम आपके साथ हैं तो फिर साथ रहे और ऐसा साथ रहे कि हुसैन (अ0) की कोई मुसीबत ऐसी नहीं जिसमें उन्होंने साथ न दिया हो, अगर हुसैन (अ0) ने पानी न पिया तो उन्होंने भी नहीं पिया। अगर हुसैन (अ0) भूखे थे तो वह भी भूखे रहे। अगर हुसैन (अ0) ने अपनी आँखों से अपनी औलाद को ख़ून में नहाते हुए देखा तो उन्होंने भी अपने बच्चों का सर जन्नत के जवानों के सरदार के क़दमों पर निछावर किया, अगर हुसैन (अ0) की मुबारक गर्दन को शिम्र के खन्जर ने चूमा तो उनकी ज़िन्दगी की रग भी हुसैन (अ0) की मुहब्बत में काटी गयी। अगर हुसैन (अ0) के अहलेहरम बेपर्दा हुए तो उनकी बीबियाँ भी नंगेसर फिराई गयीं अगर हुसैन (अ0) का सर गली–गली और शहर–शहर फिराया गया तो उनके सरों का काफ़ला भी पीछे

चल रहा था। और आज भी सैकड़ों साल गुज़रने के बाद जिस मुक़द्दस रौज़े में सैयिदुश्शोहदा (अ0) आराम कर रहे हैं वहीं इमाम (अ0) के पैरों से लगे हुए कर्बला के हुसैनी भी सो रहे हैं और कल जब महशर का मैदान गर्म होगा उस वक़्त भी यह हुसैन के साथी हुसैन इब्ने अली (अ0) के साथ–साथ अपनी क़ब्र से कौसर तक और कौसर से जन्नत तक जाएँगे अपना मकान भी ऊँची जन्नत में हुसैनी महल के साथ–साथ बनाएँगे। ''हुसैन (अ0) हम आपके साथ हैं'' कितना अटल फ़ैसला था जिसको न ज़माने की धार काट सकी है न ज़ुल्म के पहाड़ कुचल सके इस फ़ैसले की सख़्ती ने बला के तूफ़ान के धारों का रुख पलट दिया। ज़ुल्म व सितम के पहाड़ों को चकनाचूर कर दिया और अपनी बात न बदली।

अब आइये हम ख़ुद को भी हुसैनी कहते हैं। बल्कि जब ज़ियारत को जाते हैं तो हज़रत सैयिदुश्शोहदा व अबुल फज़लिल अब्बास की ज़रीह सामने यह कहते हैं:

''मैं अपनी ग़ुलामी का और आपकी मुख़ालेफत से न हटने का इक़रार करता हूँ मैं आपके साथ हूँ, आपके साथ हूँ न कि आपके दुश्मनों के साथ।''

यह था दावा लेकिन क़ौल व अमल को तौलते वक़्त अगर यह अफसोसनाक मुक़ाबला सामने आ जाए कि:

1– हुसैन (अ0) सिर्फ अल्लाह से डरते थे

और हम सिर्फ ख़ुदा ही से न डरें और सबसे डरें।

2– हुसैन (अ0) ने मौत की आँखों में आँखें डालकर उसको हराया

और हम ज़िन्दगी की बनावट की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं ताकि जल्द से जल्द हमेशा की बर्बादी हासिल हो सके।

3– हुसैन (अ0) ने अपने इरादे और मज़बूती से बातिल की ताक़तों को कुचल के रख दिया

और हम को हमारी पस्त हिम्मती की वजह से बातिल की ताक़तें कुचल रही हैं।

4– हुसैन ने अपने ख़ून से इस्लाम के पेड़ को सींचा

और हम उस हरे–भरे बाग़ को बर्बाद कर रहे हैं।

5– हुसैन (अ0) ने आख़िरी दम तक किसी वजिब को न छोड़ा

और हमने वाजिब कामों को तीन तलाक़ें दे दी।

6– हुसैन (अ0) ने हमेशा औव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ी

और हम आख़िरे वक़्त पढ़ना अपना तरीक़ा बना लें।

7– हुसैन (अ0) माबूद की याद को अपने सीने से लगाए हुए दुनिया से गये

और हमारा सीना हर वक़्त शैतानी ख़यालों का अड्डा।

8– हुसैन (अ0) के ख़ेमे में तस्बीह और तहलील की आवाज़ें हों

और हमारे घरों में नाच–गानों की आवाज़ें।

9– हुसैन (अ0) के होंठ आख़िर दम तक ख़ुदा के ज़िक्र में तर रहें

और हमारे लबों पर फितने फैलाने वाली गुनगुनाहट, झूठ, ग़ीबत।

10– हुसैन (अ0) की आँखें क़ुर्आनी सतरों का तवाफ करें

और हमारी आँखें गुनाहों के जलवों को तलाश करती हुई।

अगर आज का हुसैनी ऐसा है तो.....................

फरियाद बर ग़रीबी व बेयारिये हुसैन (अ0)

□□□

हुसैन (अ0) के मक़सद की हिफ़ाज़त करने वाले

मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इज्तेहादी (पाकिस्तान)

इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) का मुबारक नाम आते ही ज़हन में एक बीमार और कमज़ोर बेचारे शख़्स का ख़याल ज़हन में उभरने लगता है। एक ऐसी हस्ती जो इन्तिहाई मजबूरी की हालत में हर ज़ुल्म सहने पर मजबूर थी। इमामे सज्जाद (अ0) के बारे में यह ख़याल ख़ुद उनकी ज़ात पर एक बहुत बड़ा ज़ुल्म है। यह ठीक है कि अल्लाह के इरादे की वजह से आप कर्बला के वाक़ेए, ख़ास तौर पर आशूर के दिन बीमारी की हालत में थे। लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आप सारी ज़िन्दगी मरीज़ रहे। और कोई मुजाहिदाना काम अन्जाम नहीं दिया। बल्कि हक़ीक़त तो यह है आशूर के दिन भी आप पर अल्लाह की मसलेहत की वजह से आपको मरज़ न होता तो आप अपने चचा अब्बास अलमदार (अ0) और भाई अली अकबर (अ0) की तरह बहादुरी के जौहर दिखाते।

लेकिन मसअला यह है कि अगर आप भी अपने बाबा, चचा और भाई की तरह बहादुरी दिखाकर शहादत का जाम पी लेते तो फिर जनाब सय्यिदुश्शोहदा के मिशन को जिस तरह जनाब सय्यिदुश्शोहदा चाहते थे कौन आगे लेकर बढ़ता।

हमें ज़हन में रखना चाहिए कि तारीख़ में कई जगहों पर जनाब सय्यदे सज्जाद ने इस बात की तकरार की है कि उनके लिए मैदाने कर्बला में लड़कर जान दे देना आसान था। मगर नंगे सर रसूल के बेटियों की साथ बाज़ारों में जाना कहीं मुश्किल। यह मुश्किल वह मुश्किल थी और यह इम्तिहान वह इम्तिहान था जिसके लिये काएनात के ख़ुदा की नज़र इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) पर पड़ी।

अगर तफसील का मौक़ा होता तो हम अर्ज़ करते कि जो इम्तिहान जनाब सय्यदे सज्जाद को कूफा व शाम के बाज़ारों में देना पड़ा उस से कहीं कम दर्जा के इम्तिहान जब नबियों के सामने आते थे तो उनके बर्दाश्त के बन्धन टूट जाते थे और वह ख़ुदा के दरबार में चिल्ला उठते थे कि ऐ ख़ुदा अब हमारे इम्तिहान को ख़त्म कर दे। लेकिन हमें पूरी कर्बला की तारीख़ में कहीं नहीं मिलता कि किसी मौक़ पर चौथे इमाम (अ0) ने अल्लाह के दरबार में अपने ऊपर होने वाले ज़ुल्मों की शिकायत की हो बल्कि हर मौक़े पर अल्लाह का शुक्रिया अदा करते नज़र आते हैं।

आख़िर इस इम्तिहान की क्या ज़रूरत थी? जनाब सय्यदे सज्जाद (अ0) पर पड़ने वाली इन मुसीबतों से दीन को क्या फायदा पहुँचा? इन सवालों के जवाब जितने मुश्किल नज़र आते हैं उतने ही आसान हैं। हम अपने नौजवानों के लिए बहुत ही मुख़तसर और सादे अलफाज़ में इन सवालों का जवाब देने की कोशिश करते हैं।

बात यह है कि सिवाए मदीने और कूफ़े के उस वक़्त की सारी इस्लामी हुकूमत में तबलीग़ के तरीक़े और रास्ते उस वक़्त की हुकूमत के क़ब्ज़े में थे। तबलीग़ के ज़रियों से मुराद मस्जिदें

और दूसरी आम इज्तेमाअ की जगहें। इन तमाम रास्तों और ज़रियों को ज़बरदस्त तरीक़े से सिर्फ इस मक़सद के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था कि अल्लाह की पनाह इमाम हुसैन (अ0) और उनके ख़ानदान के लोग हुकूमत के लिये इस्लामी हुकूमत में फितना ईजाद कर रहे हैं (अगरचे हक़ीक़त यही है कि हुकूमत इमाम हुसैन (अ0) ही का हक़ था, मगर इमाम कभी भी अपने इस हक़ के लिये ज़ुल्म व सितम या नाजाएज़ ज़रियों का इस्तेमाल नहीं करता जैसे मौलाए काएनात अली इब्ने अबी तालिब (अ0) ने अबुसुफयान के लशकर तैयार करने की पेशकश के बाद भी घर बैठने को पसन्द किया था) अल्लाह की पनाह इमाम हुसैन (अ0) एक बाग़ी के बेटे हैं, इमाम हुसैन (अ0) ख़ानदानी दुश्मनी की बुनियाद पर जंग के लिये निकले हैं। इमाम हुसैन (अ0) के साथ बेदीन लोगों की एक छोटी सी जमात है। यह है उन इल्ज़ामों का खुलासा जिनका प्रोपेगण्डा सारी इस्लामी दुनिया में किया जा रहा था। यही वजह थी कि रसूल (स0) के नवासे अपने बेहतरीन अन्सारों के साथ कर्बला में शहीद कर दिये गये और इस्लामी दुनिया में कोई तहरीक न उठी।

अब ज़रूरत थी इस बात की कि इमाम हुसैन (अ0) की कुर्बानी को दुनिया के सामने लाया जाए। और लोगों के सामने हक़ीक़ते हाल बयान की जाए। आप सोंच सकते हैं कि यह काम कितना मुश्किल हो सकता है।

सारी इस्लामी दुनिया का दौरा करके यह पैग़ाम लोगों तक पहुँचाना यज़ीद मलऊन की हुकूमत के ज़माने में किसी भी शख़्स के लिए मुमकिन न था। इसलिए इमाम हुसैन (अ0) ने यह ज़िम्मेदारी अपने बेटे इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ0) और अपनी बहन जनाब ज़ैनब (स0) के हवाले की। जनाब सानिये जहरा (स0) के बारे में हम फिर किसी वक़्त अलग बाब क़ायम करेंगे। इस वक़्त हमारा मक़सद जनाब सय्यदे सज्जाद (अ0) की ज़िम्मेदारी पर रौशनी डालना है। अब आपके लिये कुछ–कुछ साफ होता जा रहा होगा कि क्यों ख़ुदा के इरादे की वजह से चौथे इमाम (अ0) को बीमार रहना ज़रूरी था ताकि ज़ालिम अपने बातिल के धोखे में आपको कैदी बनाकर (अल्लाह की पनाह) आपकी बेइज़्ज़ती के लिए शहर बशहर फिराए। और आप (अ0) ज़ालिम की इस चाल को उसी पर पलटा दें। आप ने अपनी क़ैद से वह काम लिया जो कोई दूसरा न ले सकता था। आप जिस शहर से गुज़रे वहाँ आपने न सिर्फ यह कि अपनी मुकम्मल पहचान कराई बल्कि उन वजहों को भी बयान करते चले गये जिनकी बुनियाद पर आपके बाबा यानी इमाम हुसैन (अ0) की शहादत हुई थी। आप हर शहर, बाज़ार और हर इलाक़े में यज़ीदियत को बेइज़्ज़त करते चले गये। यहाँ तक कि सारी इस्लामी दुनिया में जो यज़ीद के किरदार को नहीं जानता था वह भी जान गया और यज़ीद के ख़िलाफ नफरत लावे में बदल गई। और घबराकर यज़ीद ने ख़ानदाने रिसालत के क़ैदियों को रिहाई दे दी। और कल तक कर्बला के वाकेए को फैलाने वाला यज़ीद परेशानी के आलम में यह कोशिश करने लगा कि किसी तरह लोगों के समाने कर्बला का वाक़ेआ बयान न हो।

लेकिन चौथे इमाम (अ0) अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर चुके थे। और कर्बला के वाक़ेए के थोड़े दिनों बाद ही यज़ीद के ख़िलाफ बग़ावतें भड़कना शुरु हो गयीं यहाँ तक कि मदीने का वाक़ेअ–ए–हुर्रा वजूद में आया यह चौथे इमाम ही का कारनामा है कि आपने यज़ीद और उसके हामियों को क़यामत तक के लिए सारी इन्सानियत के सामने नंगा करके बेइज़्ज़त कर दिया। और उनके नामों को गालियों में दाख़िल कर दिया।

□□□

जनाब उम्मे कुलसूम का मरसिया (शोक-काव्य)

''मुझ पर वह दुख पड़े जो दिनों पर पड़ते तो काली रातों में बदल जाते।''

यह एक दुखियारी बेटी की शोक–रचना है। वह बेटी जो अपने चहीते चाहने वाले बाप से बिछड़ कर केवल 75/90 दिन (या फिर कुछ महीने) ही जी सकी।

50 साल बाद– इतिहास फिर अपने को दुहराता है। अब उसी दुखियारी बेटी की एक बेटी अपने दुखों की पीड़ाओं को कविता का रूप देती है। अपने भरे पुरे घर को बोझल मन से छोड़ती है और अपने चहीते चाहने वाले बड़े भाई के साथ एक बड़े काफिले में जाती है।.........एक ही दिन में दुख पर दुख उठाती हुई अपना लहलहाता घर उजड़ते देखती है। एक ही दिन में एक एक करके अपने प्यारों का मातम करती है। अपने उस भाई को भी ज़बह होते देखती है। अपना घर लुटते, अपनी और साथी बीबियों की चादरें छिनते देखती है। फिर अपने भाई और दूसरे शहीद होने वाले के बेढके बेसर तन, बेकफन लाशें देखती हुई रस्सी में गला बन्धे बन्दी बने कर्बला छोड़ती है। फिर तो कटे सरों के साथ बन्दी बने कूफे के बाज़ार, कूफे के दरबार, शाम के बाज़ार और दमिश्क़ (शाम) के सजे काले दरबार में और अन्त में एक साल से ज़्यादा शाम के अन्धेरे काले बन्दीघर में यात्नाएँ (ज़ुल्म) झेलती है। अत्याचार के इस बन्दीघर से जब छुटना नसीब होता है और वापस अपनी नगरी मदीने पहुँचती है तो फूट पड़ती है। अपने नाना और अपनी माँ को, भाई को याद करती है, गुहार करती है। अपनी भावनाएँ यूँ कहती हैः–

[यह कोई और नहीं, इतिहास की बड़ी दुखियारी बीबी जनाब उम्मे कुलसूम हैं। हज़रत मुहम्मद (स0) की नवासी, जनाब अमीर और जनाब सैयदा की छोटी लाडली बेटी, इमाम हुसैन (अ0) और जनाब ज़ैनब की बहन.......जनाब सैयदा की पीड़ाओं की वारिस हज़रत अली (अ0) की शैली में यूँ रचना करती हैः–]

1– अपने नाना के नगर (मदीना), अब तू हमें न लें (स्वीकार न कर), हम तो दुख और शोक लेकर पलटें हैं।

2– हाँ, ख़ुदा के रसूल (स0) को हमारी ख़बर दे दे, हमको बाप से बिछड़ने का दुख पहुँचाया गया।

3– यह भी ख़बर कर दे कि हमारे मर्द तफ़ (कर्बला) में मरे पड़े हुए हैं, जिनके (शरीरों पर) सर नहीं हैं, और हमारे बच्चे भी ज़बह कर डाले गये।

4– हमारे नाना को यह भी ख़बर दे दे कि हम पकड़े और बन्दी बनाकर फिराए गये।

5– ऐ ख़ुदा के रसूल (स0) आप का दल तफ़ में खुला (बेढका) पड़ा हुआ है, उनके शरीर से कपड़े लूट लिये गये।

6– दुश्मनों ने हुसैन (अ0) को ज़बह कर डाला है, ऐ ख़ुदा के रसूल (स0), हमसे कोई नरमी, मुरुवत (पास–लिहाज़) न किया गया।

7– कहीं आप अपनी आँखों से हमें ऊँट की गद्दियों पर सवार (बन्दी) देखतीं।

8– ऐ ख़ुदा के रसूल (स0), (सदा) पर्दे की रखवाली करने के बाद (अब) हमें नामहरमों की

आँखों ने (बे खटक) देखा।

9– आप तो हमारी बड़ी रक्षा करते थे, पर इधर आपकी आँखें बन्द हुईं, उधर हम पर दुश्मन टूट पड़े (हमला कर बैठे)।

10– ऐ फ़ातिमा (स0), कहीं आप अपनी बन्दी लाडलियों को देखतीं नगर–नगर, गाँव–गाँव फिरायी जाती, वे आपकी बेटियाँ।

11– ऐ फ़ातिमा (स0), कहीं उन्हें घुमाई जाती देखतीं, और फिर कहीं ज़ैनुल आबिदीन (अ0) की ओर आँख करतीं।

12– ऐ फ़ातिमा (अ0)! कहीं हमें देखतीं कि कैसे रातें जागते बितायीं यहाँ तक कि अन्धेपन को पहुँच गये।

13– ऐ फातिमा (स0)! आपको अपने दुश्मनों (के हाथों) से वे दुख बल्कि उनका तनिक भर दुख न मिले जो हम पर पड़े।

14– अगर आप इस समय जीती होतीं और सदा ही जीती, तो क़यामत तक हम पर रोती रहतीं।

15– ऐ संवादक! बकीआ (जन्नतुल बक़ीआ) की ओर देख, ठहर और पुकार लगाः ऐ संसारों के पालने वाले (ख़ुदा) के चहीते (नबी स0) के बेटे!

16– और उनसे कह कि ए चचा, पाक पुनीत हसन (अ0), आपके भाई के घर वाले बलि हुए, ख़त्म हो गये।

17– ए चचा, आपके भाई हुसैन (अ0) बलि हो गये और आपसे दूर रेत में गाड़ दिये गये।

18– (पर इस तरह कि उनका शरीर) बेसर (था) और उन पर पशु–पक्षी ज़ोर–ज़ोर से (चीख़–चीख़ कर) मातम कर रहे थे।

19– कहीं आप देखते! दुश्मन आपके घराने की पर्दे वाली महिलाओं को बन्दी बनाकर ले गये जिनकी मदद करने वाला कोई न था।

20– आपकी सन्तान ऊँटों की नंगी पीठ पर बिठाई गई और वे औरतें खुले मुँह (बे पर्दा) फिरायी गयी, कहीं आप उनकी यह हालत देखते।

21– ऐ अपने नाना के नगर (मदीना)! अब तो हमको न स्वीकार कर, हम तो दुख और शोक लेकन पलटे हैं।

22– जब तुझ से हम निकले थे तो घर भरा था और अब पलटे हैं तो न मर्द साथ हैं न बच्चे।

23– जब निकले थे तो पूरे दल के साथ, जब लौटे तो नंगे सर, लुटे हुए।

24– (उस समय) हम खुले आम ख़ुदा की शरण में थे जबकि (आज) डरे सहमे और शरणहीन (बे आसरा) पलटे हैं।

25– (तब) हमारे दिल रखने वाले हमारे संरक्षक हुसैन (अ0) थे, (अब) हुसैन को वन में छोड़ आये हैं।

26– अब तो हम सर्वनाश (तबाह) हुए बे रखवाले के हैं, अपने भाई का नौहा (मातम) कर रहे हैं।

27– हम तो ऊँटों पर (गाँव–गाँव) फिराये गये, उन ऊँटों पर जो हमारे बैर से भरे हुए थे।

28– हम यासीन[1] और ताहा[2] की बेटियाँ हैं, अपने बाप (पितामह) पर रोते हैं।

29– हम बेशक पाक पवित्र नारियाँ हैं, (ख़ुदा की) सच्ची लगन रखने वालियाँ (उसी की) चुनी हुई विशिष्ट हैं।

30– (दुख के) इम्तेहानों पर हम सहनशील हैं और सच्ची नसीहत, अच्छी बाते बताने वालियाँ हैं।

31– अरे, ए हमारे नाना! हुसैन (अ0) मार डाले गये, हमारे बारे में तो ख़ुदा का भी पास न किया गया।

32– अरे, ऐ हमारे नाना! हमारे दुश्मन अपनी चाहतें पा गये, और हमें सता कर क्रूर बेदर्द हो गये।

33– हाँ! उन्होंने औरतों को बेपर्दा (अवमानित) किया और उन्हें ऊँट–गद्दियों पर सवार करके फिराया।

34– ज़ैनब (अ0) को उनके पर्दे से निकाला गया, फातिमा (हज़रत अली अ0 की बेटी–जनाब

ज़ैनब) रोती पीटती फिरती थीं।

35– सुकैना ''सकीना'' विरह की आग से गुहार करती थी बार–बार पुकारती थी, संसारों के पालने वाले (खुदा) से गुहार लगाती (मदद को पुकारती)

36– ज़ैनुल आबेदीन ज़िल्लत/अपमान के बन्दी थे, दुश्मनों ने कई बार उन्हें मार डालने का संकल्प/इरादा किया।

37– फिर उसके बाद तो दुनिया पर मिट्टी (पड़ी) है हमे इसी दुनिया के लिए मरने का प्याला पिलाया गया।

38– यह मेरी बीती (बिपता) है, विस्तार से मेरी हालत (का बयान) है, ए सुनने वालों! हम पर रोओ।

(1), (2) ये दोनों रसूल (स0) के उपनाम (लक़ब) हैं जो कुर्आन मजीद में भी आये हैं। □□□

एक 'सलाम' अनुवाद के साथ

मूल

हैदर(अ0) की सना मुझसे सुनाई नहीं जाती,
वह कौन सिफ़त है कि जो पाई नहीं जाती।
लज़्ज़त यह किसी चीज़ में पाई नहीं जाती,
जुज़ आले नबी(स0) ग़ैर से खाई नहीं जाती।
करता है वह रहम और बशर इज्जो तबख़्तुर,
बन्दों की ख़ुदी, उसकी ख़ुदाई नहीं जाती।
कट जायगी अपनी यूँ ही, ए ख़ाना बदोशी,
दो दिन के लिए छावनी छाई नहीं जाती।
कहती थी लईनों से यह शमशीरे अलमदार,
अब शेर के क़ब्ज़े से तराई नहीं जाती।
क़ासिम है मुसिर बहरे रिज़ा शाह है खामोश,
दौलत ज़ने बेवा की लुटाई नहीं जाती।
मरने से जवाँ बेटे के यह हो गई हालत,
लाश आप उठाते हैं उठाई नहीं जाती।
बेशीर को आग़ोश से रख्खा है लहद में,
पर चाँद सी तसवीर छिपाई नहीं जाती।
तक़रीर की क्या बात है, क्या कहना है 'यूनुस',
पर मदहे ख़ामोशी भी सुनाई नहीं जाती।

'यूनुस' ज़ैदपूरी

अनुवाद

महिमा अली(अ0) की मुझसे सुनाई नहीं जाती,
वह कौन भलाई है जो पाई नहीं जाती।
यह बात किसी चीज़ में पाई नहीं जाती,
मासूम को छोड़, और से खाई नहीं जाती।
वह करता दया, मीन मनुष्य करता है उत्पात,
मानव का अहम् उसकी ख़ुदाई नहीं जाती।
कट जायगी अपनी यूँही बनजारों के जैसी
दो दिन के लिए छावनी छाई नहीं जाती।
धिक्कारितों से कहती थी अब्बास की तलवार,
अब शेर के पन्जे से तराई नहीं जाती।
क़ासिम को चचा कैसे ही दें रन की इजाज़त,
विधवा की कमाई है, लुटाई नहीं जाती।
मरने से तरुण बेटे के यह हो गई स्थिति,
लाश आप उठाते हैं उठाई नहीं जाती।
यूँ गोद से छःमाहे को रख्खा है गढ़े में,
पर चाँद सी छाया है छुपाई नहीं जाती।
कहने की भी क्या बात है क्या कहना है 'यूनुस',
पर मूक प्रशंसा भी सुनाई नहीं जाती।

मु0 र0 आबिद

कर्बला की शेरदिल बहेन

अदीबा– बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा
अनुवादक: नजीब नगरौरी

ख़ुतब–ए–ज़ैनब ने तख़्तो ताज की
ज़ुल्म के हाथों से शौकत छीन ली
छिन गई चादर तो क्या? महशर तलक
तालिबे बैअत की हिम्मत छीन ली
(असीफ जाएसी)

यह एक हक़ीक़त है कि दुनिया के ज़्यादातर लोगों ने औरत को कमज़ोर और नाज़ुक समझकर बुज़दिल मान लिया है। और वह ख़ुद अपने को ताक़तवर होने की वजह से शेरदिल समझते हैं लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि वह ताक़तवर और कमज़ोर के मतलब को सही तौर पर नहीं समझ सके इसलिए ज़रूरी नहीं है कि हर कमज़ोर बुज़दिल हो और हर ताक़तवर शेरदिल। दुनिया और आदम की तारीख़ गवाह है कि मैदानों से बड़े–बड़े मर्द सूरमाओं के पैर उखड़ गये और अहम जंगों में बहादर और हिम्मत वाली औरतों ने जंग की। लेकिन यह भी सही है कि जब भी औरतों की दुनिया में बहादुरी, हिम्मत, सच्चाई, हक़गोई और बेबाकी के नमून–ए–अमल (Ideal) की ज़रूरत होगी तो यक़ीनन पूरी दयानतदारी के साथ कर्बला का मुजाहेदा ही हक़ बयानी और जुराअते इज़्हार का मदरसा ठहरेगा।

जहाँ सैयिदुश्शोहदा इमामे कौनैन हज़रत हुसैन (अ0) हमारी जाने उन पर क़ुर्बान हों, और उनके रिश्तेदारों और साथियों की शेरदिल औरतें अपनी बहादरी और हिम्मत के ऐसे सख़्त निशान दुनिया में छोड़ देती हैं जिन्हें दुनिया क़यामत तक मिटा नहीं सकती।

हाँ उन्हीं बहादर औरतों की सरदार का पाक नाम ज़ैनबे कुबरा है जिन्हें ''कर्बला की शेरदिल औरत'' के लक़ब से आए दिन ज़बान व क़लम से याद किया जाता है।

हुसैन (अ0) मज़लूम की यह वह दुखियारी बहन है जिसने तमाम तकलीफें बर्दाश्त करने के बाद भी हुसैन (अ0) की मदद में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। और जी–जान लगाकर हुसैन (अ0) के मक़ासिद की हिफाज़त का काम अन्जाम दिया। जिस घर की कनीज़ें आलिमा और फाज़िला हों वहाँ की बेटियों का क्या कहना और फिर फातिमा (स0) की बेटी जो आलिम–ए–ग़ैर मुअल्लिमा भी है, जिसने लोगों को क़ुर्आन का दर्स दिया। इस्लाम से पहचान करवाई। यही ज़ैनब बिन्ते अली (अ0) हैं कि जब इस्लाम पर बुरा वक़्त आ पड़ा तो ख़ुदा के दीन के लिए तमाम मुसीबतों और परेशानियों का सामना करने को तैयार हो गयीं। यही वह वक़्त था जब हुसैन मज़लूम (अ0) को यज़ीद ने ख़त भेज कर मदीने से अपनी बैअत के लिये बुलवाया था ज़ैनब ने जब सुना हुसैन (अ0) को यज़ीद ने तलब किया है और हुसैन सफर का इरादा करते हैं तो चाहने वाली बहन बच्चों को लेकर भाई के साथ सफर के लिये तैयार हुईं।

ग़रज़ हुसैन (अ0) रास्ते की तकलीफों को बर्दाश्त करते हुए कर्बला पहुँचे जहाँ ज़ुल्म व सितम करने वाली फौजों ने हुसैन इब्ने अली (अ0) का घेराव कर लिया। और पुराने सिलसिले

की तजदीद जारी रही कि बैअत कर लो वरना क़त्ल कर दिये जाओगे। लेकिन अली (अ0) के लाल के लिये ये कैसे मुमकिन था कि फासिक़ व फाजिर के हाथों पर बैअत कर लें। साथ ही ऐसे फ़साद भरे माहोल में कुरैश की अक़्लमन्द जनाबे ज़ैनब (अ0) के हिम्मत बढ़ाने वाले मशवरे भी काम कर रहे थे कि भैय्या अम्मा की खेती बर्बाद हो जाए लेकिन नाना का दीन न मिटने पाए।

हुआ भी वही जब इमाम सैयिदुश्शोहदा (अ0) के तमाम चाहने वाले ख़ुदा की राह में कुर्बान हो चुके मर्दों में सिवाए आबिदे बीमार (अ0) के कोई बाक़ी न बचा तो ज़हरा (स0) का लाल ख़ेमें में बीबियों से आख़िरी रुख़सत के लिए आया और बीबियों को सलामे आख़िर करके मक़तल की तरफ जाने का रुख़ किया कि चाहने वाली ग़मज़दा बहन ने बढ़कर आवाज़ दीः ''ज़हरा (स0) के बेटे आहिस्ता चलिये।'' हुसैन (अ0) ठहर गये पीछे मुड़कर देखा चाहने वाली बहन है। पूछा क्या बात है?

सानिये ज़हरा (स0) ने कहा अम्माँ की वसिय्यत याद आ गई। अम्माँ ने कहा था जब मेरी गोद का पाला हुसैन (अ0) आख़री वक़्त ख़ुदा हाफ़ज़ी के लिये ख़ेमे में आए तो मेरी तरफ से हुसैन (अ0) की मुबारक गर्दन को चूम लेना। भैइया! गले से रूमाल हटाइये। ज़हरा (स0) के लाल ने रूमाल हटाया। ज़ैनब ने गले को चूमा। हुसैन (अ0) को भी माँ की वसिय्यत याद आई और कहा बहन तुम भी बाज़ुओं से चादर हटाओ। ग़रज़ हुसैन ने भी उन बाज़ुओं को चूमा और कहा बहन मेरे बाद इन बाज़ुओं में रस्सी बंधेगी।

हाए अफसोस कर्बला में हुसैन (अ0) का मुबारक सर तन से जुदा करके नेज़ों पर उठाया जा रहा है बहन ख़ड़ी देख रही है। जिसने अपने जिगर के टुकड़ों को भाई पर फिदा होने के लिये मैदाने क़त्ल में में भेजा था ताकि माँ का बेटा बच जाए और नाज़ों के पाले औन व मुहम्मद शहीद हो जाएँ। इन हालात में भी ज़ैनब परेशान नज़र नहीं आतीं। मुसीबतों और परेशानियों में गिरफ्तार होने के बाद भी ज़िम्मादारी से अन्जान नहीं हैं। सुब्ह से शाम तक हुसैन (अ0) और उनके साथियों पर मातम करने वाली बहन सैयिदे सज्जाद और अहले हरम की हिफाज़त को अपना वज़ीफा समझ रही है।

क्योंकि चलते वक़्त हुसैन (अ0) ने जनाब ज़ैनब से कहा थाः ज़ैनब! मेरी शहादत के बाद क़ाफले वालों की हिफाज़त करने वाली तुम हो। यतीम बच्चों को तसल्ली देना तुम्हारा काम है। मेरा बीमार बेटा इमामे वक़्त तुम्हारे हवाले है। मेरी चहीती सकीना का हर लम्हे ख़याल रखना तुम्हारी ज़िम्मादारी है।

हुसैन (अ0) की शेरदिल बहन ने भाई की वसिय्यत के मुताबिक़ क़ाफले की बेहतरीन सरदारी की। जब शामेग़रीबाँ आई। हुसैनी ख़ेमों में आग लगा दी गई, अली की लाडली बेटी ज़ैनब (स0) ने हुज्जत पूरी करने के लिए इमामे वक़्त से मसअला मालूम किया।

ऐ बेटा! तमाम ख़ेमे जल रहे हैं इस आलम में इमामत की मसलहत क्या है? ख़ेमों में रहें और जल जाएँ या ख़ेमों से बाहर निकल जाएँ।

इमामे सज्जाद ने बाहर निकल जाने का हुक्म दिया। बिन्ते ज़हरा (स0) ने इमाम के हुक्म की तामील की और ख़ासकर जनाब आबिदे बीमार को जलते हुए ख़ेमों से बाहर ले आईं। ग्यारहवीं मुहर्रम की रात में जब अहले हरम को शुमार करते वक़्त सकीना नज़र नहीं आईं तो

अपनी मददगार बहन जनाब उम्मे कुलसूम को साथ लेकर हैबतनाक जंगल में सकीना की तलाश में निकलीं। आवाज़ दे रही थीं कि एक ग़ढ़े से आवाज़ आई ज़ैनब (स0) सकीना यहाँ है।

ग़र्ज़ कि यह दोनों बहने सकीना बिन्ते हुसैन (अ0) को लेकर आईं। दूसरे दिन अहले हरम को क़ैद करके कूफ़ा ले जाया गया और कूफ़े में फिराने के बाद शाम ले जाया गया लेकिन हुसैन (अ0) की मज़लूमियत को फैलाने वाली ने ज़ुल्म के ख़िलाफ ज़बरदस्त एहतेजाज और हुसैनी मक़ासिद को फैलाने में बड़ी कोशिश फरमाई।

अगर हुसैन (अ0) ने ''ला इलाहा इल–लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के लिये अपनी जान को ख़ुदा के रास्ते में कुर्बान कर दिया तो सानिये ज़हरा ने भी ''ला इलाहा इल–लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' को बाक़ी रखने के लिए कर्बला से कूफ़ा और कूफ़े से शाम तक रस्सियों में बंधा रहकर मुसीबतों को बर्दाश्त किया। जब यज़ीद के दरबार में अहले हरम को लाया गया तो यज़ीदे मलऊन ने जो शाही तख़्त पर बैठा हुआ अहले हरम के सामने हुसैन (अ0) के सर की बेअदबी कर रहा था कि एक शामी ने बीबियों की तरफ इशारा करते हुए पूछा यह कौन बच्ची है? यज़ीद ने कहा यह हुसैन की बेटी फातिमा है। उस शामी मर्द ने कहा। इस बच्ची को मेरी कनीज़ी में दे दो जेसे ही हुसैन (अ0) की शेरदिल बहन ने उस शामी मर्द से गुस्ताख़ी का जुमला सुना। उस बदबख़्त से इशारा करते हुए कहाः किसकी मजाल है कि हुसैन (अ0) की औलाद को कनीज़ बनाए। हम उस मज़हब की बुनियाद रखने वाले घर के लोग हैं जिन्होंने कुर्आन की हिफाज़त की और इस्लाम को बर्बाद होने से बचाए रखा।

सानिये ज़हरा (स0) ने भरे मजमे में अली के लहजे में बहादराना अन्दाज में ऐसी ज़ोरदार तक़रीर की कि तमाम तमाशाइयों के मुँह बन्द हो गये। ज़ैनबे कुबरा ने अपने ख़ुतबे के ज़रिये लोगों को बता दिया कि अली की बेटी, रसूल (स0) की नवासी, फातिमा (स0) की नूरे नज़र और हुसैने मज़लूम की हमदर्द बहन ज़ुल्म के तूफ़ान और ज़्यादती से नहीं डरती।

बहुत ही बहादुरी के साथ यज़ीद जैसे हाकिम जाबिर से कहती हैंः ''सारी तारीफ और हम्द परवरदिगारे आलम के लिए है और दुरूद व सलाम है आख़री नबी (स0) पर कि जिसकी आल को शहादत का रुतबा मिया। ऐ यज़ीद! हम रसूल की इज़्ज़त को सताकर तुझे क्या मिल गया, अगर तू यह समझता है कि तूने हमें क़ैद करके, शहर–शहर फिराकर हमारी इज़्ज़त में कुछ कमी कर दी है तो ऐसा हरगिज़ नहीं है।

अगर तेरा गुरूर तेरी हुकूमत के फैल जाने पर है तो जान ले कि रोज़े जज़ा व सज़ा (क़यामत) तुझे तेरी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी कि जिस दिन एलान होगा कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत हो।

यक़ीनन तेरी हुकूमत ख़त्म होने वाली है, जमाअत भाग जाने वाली और राए बेकार है। बस हर हाल में अल्लाह की हम्द है जिसकी तरफ तमाम मामलों को लौटना है जो हमारे कामों का बनाने वाला है।

बहरहाल हज़रत ज़ैनब (स0) ने अपनी मर्ज़ी और शख़्सियत को माबूद की मर्ज़ी में फ़ना कर दिया और मुसीबतों और परेशानियों में होने के बाद भी हक़ीक़ी माबूद की हम्द व सना (तारीफ़) और अपने भाई का तज़किरा करती रहीं। हमेशा भाई को याद करके रोती रहीं।

बक़िया पेज न0 39 पर

''औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।''

इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

ख़ुदा के नज़दीक जैसी मर्द की इबादत है वैसी ही औरत की इबादत है। उसके भी माल है क़ीमत है। जन्नत, अच्छा बदला और इबादत मर्द से ही ख़ास नहीं है। ख़ुदा की रहमत, दया देन उसके बन्दों के लिए है, वे चाहे मर्द हों या औरत। क़ुर्आन मजीद में हैः

''मर्द या औरत में से जो नेक काम करेगा और वह मोमिन होगा तो हम उसे पाक ज़िन्दगी देंगे और जो उन्होंने नेक काम किये हैं उनका अच्छे से अच्छा बदल देंगे।''

इस आयत से साफ–साफ पता चलता है कि आदमी का ईमान और नेक काम ही सच्ची कसौटी है। पाक ज़िन्दगी और आख़िरत का अच्छा बदला पाने के लिए कोई दूसरी शर्त नहीं है, न मर्द होना शर्त है और न औरत होना शर्त है। इसी तरह उम्र की भी शर्त नहीं न ही जाति पात, देख, पद, जगह का बन्धन है। रसूल (अ0) का कहना हैः

''जन्नत की औरतों में चार बढ़ी हुई (श्रेष्ठ) हैः ख़दीजा[1], फातिमा[2], मरियम[3] और आसिया।[4]

अगर औरत ख़ुदा की इबादत करती है और उसको पहचानती और मानती है तो उसे ख़ुदा की तरफ से बड़ा अच्छा बदला और पाक जीवन मिलेगा। अगर बुरे, पापी मर्द की तरह बुरे काम करने वाली हो तो सदा का अज़ाब झेलेगी।

क्योंकि जनाब नूह (अ0) और हज़रत लूत (अ0) की बीवियों ने ख़ुदा के क़ानून को नहीं माना था और अपनी बात पर अड़ी रही थी इसलिए क़ुर्आन के अनुसार जहन्नम में हैः–

'काफिरों के लिए ख़ुदा ने नूह (अ0) की बीवी और लूत (अ0) की बीवी की मिसाल दी है, कि वे हमारे बन्दों में दो नेक बन्दों की आधीन (Under) थीं उन दोनों ने बेईमानी की तो उन्हें दो नबियों के रिश्ते ने ख़ुदा से बेपरवाह नहीं किया। उनसे कहा गया जहन्नम में पहुँच जाने वालों के साथ पहुँच जाओ।'' –क़ुर्आन मजीद

क़ुर्आन मजीद के सूर–ए–मरियम और सूर–ए–दहर में फिरऔन की मोमिन बीवी के बारे में आयतें दिखाती हैं कि इबादत में औरत की बहुत ऊँची जगह है। और उसे क़यामत के दिन बड़ा अच्छा बदला और सवाब मिलेगा। यह बात उन लोगों का मुँहतोड़ जवाब है जो यह कहते हैं कि ख़ुदा के नज़दीक औरत की इबादत की कोई हैसियत और सच्चाई नहीं है।

औरत अपने माँ बाप की बेटी और अपने बच्चों की माँ है। किसी को यह हक़ नहीं कि उससे ये रिश्ते छीन ले कि इसको छीनना बेईमानी, गलत और अन्याय है।

क़ुर्आन मजीद बेटी को माँ बाप की ऐसी

(1) रसूल (स0) की बीवी (2) रसूल (स0) की बेटी (3) ईसा (अ0) की माँ (4) फिरऔन की बीवी

ही औलाद समझता है जैसे बेटे को समझता है और जब उसकी शादी हो जाती है और बच्चे हो जाते हैं तो फिर उसे औलाद की माँ समझता है। कुर्आन मजीद ने अरब के बद्दुओं (जंगली असभ्य लोग) से अपना (ख़ुदा का) नाराज़ होना दिखाया है जो अपनी लड़कियों को जीते जी मिट्टी में दफन कर देते थे। उन्हें जुल्म वाले इस बुरे काम पर बुरी तरह मना किया हैः

'अपनी लड़कियों को रोज़ी की कमी (ग़रीबी) की वजह से मार न डालो। (सूरा 'इनआम' 151)

इस आयत में बेटी को साफ–साफ औलाद कहा गया है। यह इतिहास और भटके हुए लोगों का मुहँतोड़ जवाब है।

औरत अपने बच्चों की माँ है। कुर्आन मजीद में हैः

''माँओं को चाहिए कि वे अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलायें।''(सूरा 'बक़रा' 233)

कुर्आन में हज़रत मूसा (अ0) के बारे में हैः 'हमने मूसा (अ0) की माँ पर वहि की।'

रसूल (स0) हज़रत फातिमा (स0) के बारे में कहते हैंः

फातिमा मेरा टुकड़ा है।

(बिहारुल अनवार भाग–42 पृष्ठ–23)

दूसरी रिवायतों में आया हैः

हमारी औलाद चाहे बेटा हो या बेटी हमारे जिगर हैं। (सफीनतुल बिहार भाग–8 पृष्ठ–80)

औरत की औलाद बेखटके उसके बाप के नवासे (नवासी) हैं। रसूल के नवासे के रूप में इमाम हसन (अ0) और इमाम हुसैन (अ0) की पहचान इतिहास या उन लोगों की खुली काट है जो नवासे (नवासी) को नाना की औलाद नहीं मानते।

इस्लाम धर्मशास्त्र (फिक़्ह) में वे सभी लोग रसूल (स0) के रिश्तेदार है जिनकी माँ सैदानी हैं बल्कि शीओं के बड़े मर्जा (महान–धर्माचार्य) सैयद मुर्तज़ा का तो फतवा था कि उसको भी ख़ुम्स दिया जा सकता है जो माँ की ओर से रसूल से रिश्ता रखता है।

मरने से औरत मिटती नहीं बल्कि मर्द ही की तरह वह भी बाक़ी रहती है और उसके लिए भी अमर जीवन है। ख़ुदा की इबादत होने पर वह हमेशा जन्नत में रहेगी और अगर उसकी इबादत से दूर होगी तो सदा के अज़ाब में रहेगी। कुर्आन मजीद की हज़ार से ज़्यादा आयतें इन बातों को साफ–साफ बताती हैं। **(जारी)**

बक़िया............कर्बला की शेर दिल बहेन

क्योंकि उन्हें मालूम था कि हुसैन मज़लूम पर रोना कि जिसने अपनी ज़िन्दगी ख़ुदा के रास्ते में लुटा दी हो मज़लूमियत को फैलाना, जुल्म के ख़िलाफ एहतेजाज और माबूद की ख़ुशी होकर ऐन इबादत है।

हक़ीक़त में अगर हुसैन (अ0) की शहादत न होती और ज़ैनबे कुबरा (स0) कैद न होतीं तो आज इस्लाम न होता यह हुसैन (अ0) व ज़ैनब (स0) की मेहनतों का फल है कि आज हर तरफ दुनिया में इस्लाम अपनी ठोस बुनियाद और न ख़त्म होने वाली अज़मतों के साथ बाक़ी है। बस अब में अपने मज़मून को अहसन दानापूरी के मरसिये के एक बन्द पर ख़त्म करती हूँः

चश्मे दुनिया ने कहीं देखी नहीं ऐसी बहेन
ढूँढने वाले बता सकते नहीं कैसी बहेन
शह की माँ फ़ातिमा और फ़ातिमा की जैसी बहेन
मुनफरिद भाई था जैसा मुन्तख़ब वैसी बहेन
भाई ने गर्दन कटाकर हक़ को ज़िन्दा कर दिया
और बहन ने जुल्म के शोलों को ठण्डा कर दिया

इदारा

मुख्य समाचार

आयतुल्लाहिल उज़्मा सीस्तानी की तहरीरी ताईद के बिना माडल निकाहनामा पर अमल जाएज़ नहीं : मौलाना कल्बे जवाद साहब

लखनऊ। क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि इस्लाम को बदनाम करने के लिए यह प्रोपगण्डा किया जा रहा है कि इस्लाम में औरतों के साथ सख़्त नाइंसाफी की गई है मौलाना ने कहा कि इस्लाम में ख़वातीन को पूरे हुकूक़ दिये गये हैं जिनमें नाइंसाफी का सवाल नहीं। कुछ मसलहतों की बुनियाद पर मर्दों को तलाक़ का हुक्म दिया गया है और औरतों को नहीं क्योंकि आम तौर से औरतों में जज़्बात ज़्यादा होते हैं और अगर उन्हें तलाक़ का हक़ मिल गया होता तो कोई निकाह दो चार महीने से ज़्यादा न चल पाता लेकिन औरतों को ज़ुल्म व सितम से महफूज़ रखने के लिए शरीअत ने रास्ते पैदा किये हैं और शरअी हाकिम को हक़ दिया गया है कि वह किसी ऐसी सूरते हाल में सीग़–ए–तलाक़ जारी करके औरत को छुटकारा दिला सकता है। दूसरी सूरत यह है कि अक़्द के वक़्त औरत शर्त रख सकती है कि शौहर मुझे तलाक़ के सिलसिले में अपनी वकालत दे दे। इस सूरत में भी औरत नाइंसाफी और ज़ुल्म से बचने के लिये शरई हाकिम से राब्ता करके तलाक़ हासिल कर सकती है।

मौलाना ने कहा कि मीडिया में यह जो शोर मचवाया गया कि शीआ पर्सनल लॉ बोर्ड की तरफ से औरतों को तलाक़ का हक़ मिल गया है तो यह सिर्फ प्रोपगण्डा है। यह सारे हुकूक़ पहले से फ़िक़्हे जाफरी में औरतों को हासिल हैं और उन पर अमल हो रहा है। निकाह नामा में यह भी लिखा है कि आयतुल्लाह सीस्तानी दामा ज़िल्लहू के अमरीका में वकील आक़ाए सैलानी के मुताबिक़ उन्होंने आयतुल्लाह सीस्तानी से तैय्यार किये गये निकाहनामे की ज़बानी ताईद हासिल कर ली है। इसमें पहली बात तो यह कि खुद आक़ाए सैलानी अमरीका में मुतनाज़ेआ शख़सियत हैं और बुश की इफ़्तार पार्टी में तमाम उलमा के बाइकाट करने के बाद भी उन्होंने अकेले शिरकत करके और यहूदियों से बराबर ताल्लुक़ात की बिना पर मख़दूश शख़्सियत के हामिल हैं। दूसरी बात यह है कि इतनी अहम बात में तहरीरी ताईद ज़रूरी है और जब आयतुल्लाह सीस्तानी से इस निकाहनामे के सिलसिले में तहरीरी तौर पर और ई–मेल के ज़रिये पूछा गया तो उन्होंने भी अभी तक ख़ामोशी इख़्तियार की है। इसका मतलब है उनकी ताईद हासिल नहीं है मगर वह किसी वजह से ख़ामोश हैं। मौलाना ने कहा कि जब तक आयतुल्लाह सीस्तानी की तहरीरी ताईद न मिल जाए उनके मुक़ल्लिदीन पर इस निकाहनामे पर अमल जाएज़ न होगा ख़ास कर वह पहलू कि तलाक़ के बाद भी पिछले शौहर अजनबी होते हुए औरत को गुज़ारा देगा। इसके साथ दूसरे मराजे केराम की ताईद भी ज़रूरी है।

बुश दुनिया में अकेला रह गया: अहमदी नेजाद

तेहरान। ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यु बुश को अमरीकी अवाम की राए लेने का मशवरा देते हुए कहा कि उनके मुल्क का ऐटमी प्रोग्राम दूसरे मुल्कों के लिए तरग़ीब का बाएस है। अहमदी नेजाद ने कहा कि मिस्टर बुश अपने महल से बाहर आकर देखें तो उन्हें पता चल जाएगा कि वह दुनिया के साथ–साथ अपने मुल्क में भी अकेले रह गये हैं। इससे पहले मिस्टर बुश ने कहा था कि ईरानी राष्ट्रपति पूरी दुनिया का मुक़ाबला करने के लिये क़दम बढ़ा रहे हैं ग़ौर करने की बात है कि सलामती कोंसिल में ईरान के ऐटमी प्रोग्राम की वजह से उस पर पाबन्दी लगाने के बारे में क़रारदाद पर ग़ौर किया जा रहा है मिस्टर अहमदी नेजाद ने कहा "मिस्टर बुश आप अमरीका के किसी भी सूबे का दौरा करके अवाम को एक स्टेडियम में बुला कर देखें कि वह आप के साथ कैसा सुलूक करेंगे मुझे पूरा यक़ीन है कि अमरीकी लोग भी आपके साथ वैसा ही सुलूक करेंगे जैसे कि इण्डोनेशिया के लोग करते।"

उन्होंने कहा मग़रिबी मुल्कों का ईरान को ऐटमी तकनीक के मक़सद से हटाने की कोशिश कोई अहमियत नहीं रखती। ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि कुछ बड़ी ताक़ते खुले तौर पर यह समझती हैं कि वह पूरी दुनिया पर क़ब्ज़ा कर सकती हैं मग़रिबी मुल्कों को शक है कि ईरान ऐटम बम बनाने की कोशिश कर रहा है जबकि ईरान का कहना है कि वह सिर्फ ऐटमी बिजली की ज़रूरत को पूरा करने के लिए यूरेनियम बढ़ा रहा है।

रहमतमाब की याद में

अज़ीम मजालिस का बीसवाँ दौर

लखनऊ। रहबरे मिल्लत अलमबरदारे इत्तेहादे बैनुलमुस्लिमीन मौलाना सै0 कल्बे आबिद साहब क़िब्ला रहमतमाब रह0 की याद में 16–17 दिसम्बर 2006ई0 को इमामबाड़ा गुफ़रानमाब में अज़ीम मजालिस का प्रोग्राम हुआ जिसमें मुल्क के मशहूर व मारूफ उलमा व ज़ाकेरीन ने बसीरत अफरोज़ बयानों से इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन का सबक़ दिया। उलमा व ज़ाकेरीन ने इन मज्लिसों के दौरान कहा कि मौलाना कल्बे आबिद साहब मरहूम की पूरी ज़िन्दगी इंसानियत की बुनियाद पर थी। उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी मुसलमानों के मुख़्तलिफ फिरक़ों में इत्तेहाद के ऊपर गुज़ार दी। इन मजालिस में दो दिन तक क़रीबी ज़िलों से आए हुए हज़ारों की तादाद में मोमिनीन ने शिरकत फरमाकर रहबरे मिल्लत को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया।

अज़ीम मजालिस में देहली से आए हुए अल्लामा अक़ीलुल ग़रवी, मौलाना मुहम्मद हुज्जत, मौलाना ज़ैग़मुर रिज़वी, मौलाना प्रोफेसर कमालुद्दीन अकबर जाएसी, मौलाना प्रोफेसर अबुलक़ासिम, मौलाना सफी हैदर, मौलाना सफदर हुसैन, मौलाना अतहर अब्बास, मौलाना समीउल हसन वसीम जाएसी, मौलाना मुमताज़ अली, मौलाना मज़ाहिर अली, मौलाना ज़फरुलबारी साहेबान व दूसरे उलमा ने भी ख़िताब किया। इसके अलावा बहुत से शायरों ने शोहदा–ए–कर्बला को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया।

शीआ कालेज के बानियों की हैसियत नुमायाँ होनी चाहिए : मौलाना कल्बे जवाद

लखनऊ। क़ाएदे मिल्लत मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी ने शीआ कालेज से मुताल्लिक़ कुछ बातों की वज़ाहत करते हुए कहा कि मौलाना ताहिर जरवली मरहूम के बेटे अम्मार जरवली ने जो पम्फलेट तक़सीम किये थे उसे भी मेरे नाम से जोड़ दिया गया जब कि हक़ीक़त यह है कि मैं शीआ कालेज इन्तिज़ामिया की मीटिंग में पहली बार कुछ लोगों के इसरार पर शरीक हुआ। बहुत ही पुरअमन माहोल में ख़ुशगवार गुफ़्तगू हुई मैंने किसी पर न कोई इलज़ाम लगाया न किसी तरह का एतेराज़ किया मैंने सिर्फ इन्तिज़ामिया के सामने तीन बातें पेश कीं पहली यह कि मौलाना ताहिर जरवली मरहूम साहब की इस इदारे के लिये बड़ी ख़िदमात है इसलिए उनके बेटों में से किसी को मिम्बर की हैसियतसे ख़िदमत का मौक़ा दिया जाना चाहिए जिसके लिये मैंने शौज़ब काज़िम जरवली साहब का नाम पेश किया।

दूसरी बात यह कि इस कालेज में कालेज के बानी की हैसियत नुमायाँ होनी चाहिए जिस पर सिक्रेट्री अख़्तर रिज़वी (रिज़वी बिलडर) ने ताईद की और एक उसूली बात कही कि कालेज के गेट पर बानी का नाम होना चाहिए तीसरी बात यह कि शीआ कालेज जिस ज़मीन पर क़ायम है वह कर्बला नसीरुद्दीन हैदर की ज़मीन जो इस शर्त पर दी गयी थी कि कालेज कर्बला की देखभाल करेगा और रख रखाव का ख़र्च भी बर्दाश्त करेगा लेकिन इसके बारे में बहुत सी शिकायतें मिल रहीं है इसलिए इन्तिज़ामिया को इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए इसके अलावा मैंने और कोई बात नहीं की।